चन्दामामा
जनवरी १९७०

खेत को चाहिये पानी

और पौधों को खाद

बच्चों को चाहिये टॉनिक

मधुर हो जिसमें स्वाद

बच्चों को स्वस्थ और सबल
बनाने के लिये सदा पिलाइये

लाल-शर

(डाबर बालामृत)

डाबर

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) प्रा० लि०,
कलकत्ता-२६

चन्दामामा

जनवरी १९७०

लोटपोट

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
चन्दामामा में प्रकाशनार्थ अनेक लेखकों ने हमारे पास रचनाएँ भेजीं। उन में से प्रकाशन के योग्य रचनाएँ चुनकर हम बराबर प्रकाशित कर रहे हैं। जिन लेखकों ने अस्वीकृत हालत में अपनी रचनाओं की वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकटें भेजीं, उन्हें हम वापस कर रहे हैं। फिर भी हमारे पास अनेक अस्वीकृत रचनाएँ डाक-टिकटों के अभाव में पड़ी हुई हैं। भविष्य में कृपया लेखक अपनी रचनाओं के साथ पर्याप्त डाक-टिकटें अवश्य भेजें।
वर्ष: २१ जनवरी १९७० अंक: ५

मिट्टी का सोना

एक गाँव में एक किसान था। उसके एक लड़का था। जब वह छोटा बालक था, तभी उसकी माँ मर गयी। कुछ दिन बीत गये। वह किसान भी बीमार पड़ गया। उसको लगा कि उसकी मौत निकट आयी है। उसने अपने लड़के को पास बुलाया और कहा–"बेटा, मैं गरीब हूँ। इसलिए मैं तुमको ज़मीन-जायदाद दे नहीं सकता हूँ। लेकिन मैं तुमको आशीर्वाद देता हूँ कि तुम मिट्टी को भी हाथ में लोगे तो वह सोना बन जाय।"

अपने पिता के मरने के बाद लड़के ने बड़ी भक्ति के साथ अपने माँ-बाप का स्मरण किया और बड़ी मेहनत के साथ काम करने लगा। उसकी मेहनत की वजह से उसे इतने रुपये मिले कि उसने अंगूर का एक बगीचा खरीदा। सब बगीचों से ज्यादा उसके बगीचे में अंगूर लगे।

कुछ समय बाद उसने और भी कई फलों के बगीचे खरीदे। मछली पकड़ने वाली नाव भी खरीदी। तेल के कोल्हू चलाये। तेल और मछलियों के व्यापार में उसे खूब फ़ायदा होने लगा। जल्द ही वह उस शहर के बड़े अमीरों में से एक अमीर बन गया। वह जो भी काम करता, उसे फ़ायदा ही फ़ायदा होता। अब वह ऐश-आराम की जिंदगी बिताने लगा। राजमहल जैसे महल में दिन बिताते हुए उसने एक अमीर की लड़की से शादी की। उसके दिन मजे में कटने लगे।

एक दिन उसे अपनी क़िस्मत पर संदेह पैदा हुआ। उसने अपने एक दिली दोस्त से कहा–"दोस्त, मेरी ताक़त के बाहर की क़िस्मत मुझे प्राप्त हुई है। इसलिए मुझे न मालूम क्यों, डर लगता है। मुझे इतनी आसानी से जो संपत्ति मिल गयी है, वह

उतनी ही सरलता से जा भी सकती है। लक्ष्मीदेवी का मुझ पर क्रोध पैदा हो सकता है। उसको संतुष्ट करने के लिए मैं कोई ऐसा काम करना चाहता हूँ जिससे मेरा नुक़सान हो। ऐसा कोई उपाय बताओ जिससे मुझे जरूर ही नुक़सान हो जाय।"

उस युवक के दोस्त ने सोचते हुये पूछा–"खजूर कहाँ मिलते हैं?"

"काइरो से आते हैं न?" युवक ने जवाब दिया।

"फिर क्या, यहाँ पर जो खजूर मिलता है उसे ज्यादा सा ज्यादा दाम देकर खरीदो। उसे ऊँटों पर काइरो ले जाकर वहाँ पर कम से कम दाम पर बेच दो। तुमको जरूर नुक़सान होगा।" दोस्त ने सलाह दी।

यह सलाह उस युवक को बड़ी अच्छी लगी। उसने दूसरे शहर के व्यापारियों के पास जो कुछ खजूर था, सब खरीद लिया। दाम भी अधिक लगाया था। इसके बाद उसने कुछ ऊँटों को किराये पर लिया। खजूर के झाबों को उन पर लदवा कर काइरो के लिए रवाना हुआ।

कई दिन तक उसने रेगिस्तान में यात्रा की। पिरामिड़ों के प्रदेश में पहुँचने
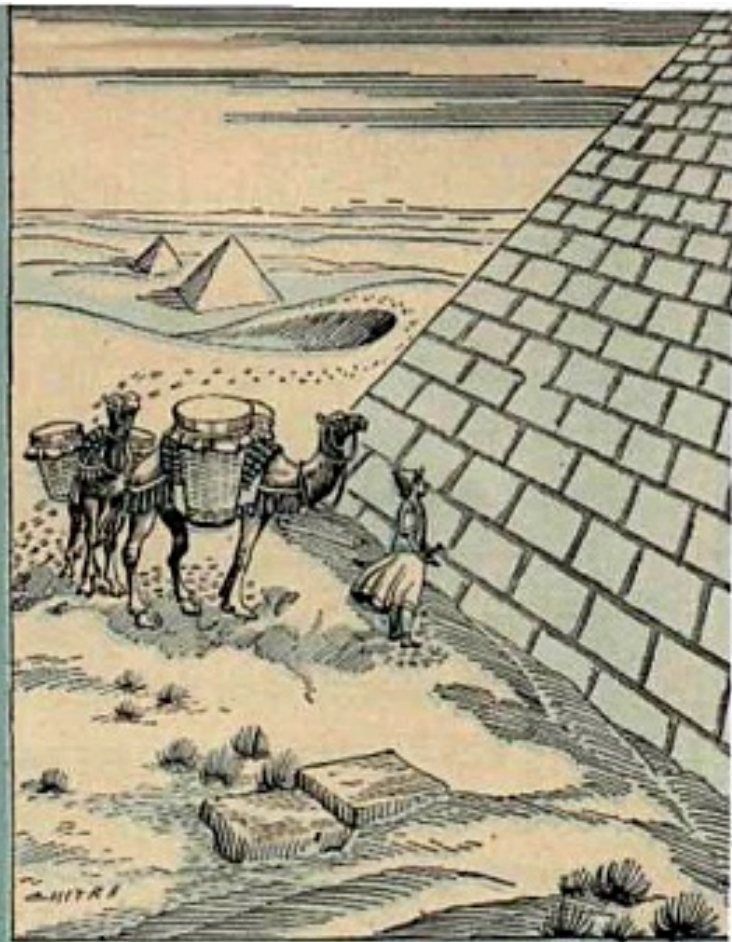
पर वह आश्चर्य चकित हो खड़ा रह गया। उसी वक़्त ईजिप्ट देश का राजा एक सफ़ेद घोड़े पर सवार हो उधर से आ निकला। उसके साथ उसका परिवार और कई सिपाही भी थे। सभी सिपाहियों के हाथों में छलनियाँ थीं।

युवक ने राजा को देखते ही नमस्कार किया और बड़ी अदब के साथ पूछा–"सरकार, सिपाही सब अपने हाथों में छलनियाँ लेकर क्यों आये हैं?"

इस पर राजा ने जवाब दिया–"क्या बताऊँ? आज सुबह मैं इस ओर घोड़े पर सैर करने निकला। उस वक़्त मेरे हाथ की

एक अँगूठी बालू में कहीं गिर गयी जो शादी के समय की थी। वह अंगूठी मेरे लिए प्राणों के समान है। वह मुझे जब तक न मिलेगी तब तक मैं इस बालू को छलनियों से छलवाना चाहता हूँ।"

इसके बाद राजा ने उस युवक से पूछा– "तुम कइरो किस काम से जा रहे हो?"

"कइरो में खजूर बेचने जा रहा हूँ।" युवक ने ऊँटों पर के झाबे दिखाते हुये कहा।

राजा ने अचरज में आकर कहा– "कइरो में खजूर बेचोगे? पास के खजूर के पेड़ों को एक बार देखो तो। इन में खजूर कैसे लगे हुये हैं? एक पेड़ का खजूर तोड़ने में एक दिन से ज्यादा समय लगता है। तुम अपना माल कइरो ले जाओगे तो एक झाबे के लिए एक सिक्का तक न मिलेगा। तुम्हारा बड़ा नुक़सान होगा।"

राजा के अनुचर और सिपाही भी हँस पड़े।

युवक ने अपने दृढ़ निर्णय की सूचना देते हुये कहा–"आप कहते हैं कि मेरा नुक़सान होगा, मगर मेरा डर यह है कि मेरा नुक़सान ही न होगा। मेरे पिताजी ने मरते दम यह आशीर्वाद दिया है कि तुम मिट्टी भी छुओगे तो वह सोना बन जायगी।" ये शब्द कहते युवक ने झुक कर मुट्ठी भर बालू लिया।

उसने मुट्ठी खोली तो बालू खिसक गया और सोने की अंगूठी बच रही।

"यह मेरी खोई हुई अंगूठी है।" राजा आश्चर्य से चिल्ला पड़ा।

राजा ने युवक की क़िस्मत की बड़ी तारीफ़ की और बड़ी आसानी से अपनी अंगूठी ढूंढ देने के कारण उसे कई क़ीमती उपहार देकर वापस भेज दिया।

युवक नुक़सान की खोज में गया था, पर और फ़ायदे के साथ घर लौट आया।

गधे की भलाई

मोराको देश में एक शहर के बाहर एक कुआँ था। शहर के लोग वहाँ जाकर पानी भरकर ले जाते थे। एक दिन मन्सूर नामक एक युवक उस कुएँ के पास आया। एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठकर पानी भरने आने-जानेवालों को देखता रहा। वह अकेला ही था और उसके माँ-बाप मर गये थे। किसी दूसरे गाँव में उसका काका था। उसके अलावा इस दुनिया में उसका अपना कहनेवाला कोई दूसरा व्यक्ति न था।

मन्सूर देखता ही रहा कि एक युवती कुएँ के पास आयी। अपना घड़ा भरकर उसने बुरखा हटाया और पानी पिया।

मन्सूर ने उस युवती को देखते ही उसे मोह लिया। उसे लगा कि वह इस जिंदगी में ऐसी सुंदर औरत को कहीं देख न सकेगा। इसलिए वह उसके पीछे पीछे उस औरत के घर की तरफ़ चला। उस युवती का नाम अमीना था। मन्सूर ने अमीना के पिता से मिलकर कहा–"मैं तुम्हारी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

"देखो बेटा, मेरी बेटी से और भी कई जवान शादी करना चाहते हैं। मैं भी जल्द ही कोई न कोई संबंध ठीक करना चाहता हूँ। अमीना की शादी तुम्हारे साथ करने में मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन मेरी एक शर्त है–वह यह है कि तुमको पाँच सौ तोले चांदी देनी होगी। तब मैं अपनी लड़की की शादी तुम्हारे साथ ज़रूर करूँगा।" व्यापारी ने कहा।

मन्सूर के पास जो चांदी थी, वह तीस तोले से ज़्यादा न थी।

"पाँच सौ तोले चांदी के माने कम नहीं है। क्या मुझे थोड़ी मीयाद दे सकते हैं?" मन्सूर ने व्यापारी से पूछा।

नरेन्द्र गुप्त

"मैं ज़्यादा मीयाद तो नहीं दे सकता, मगर दस दिन की मोहलत दे सकता हूँ। इन दस दिनों के अन्दर तुम पाँच सौ तोले चांदी का इंतज़ाम न कर सकोगे तो यहाँ तक आने की ज़रूरत नहीं।" अमीना के बाप ने कहा। दसवें दिन उस व्यापारी से मुलाक़ात करने का वादा करके मन्सूर लौट आया। वह यह सोचते गली-कूचों में घूमने लगा कि उसे चार सौ सत्तर तोले चांदी कौन देगा। देगा भी तो उसका कर्ज़ वह कब तक चुका सकेगा?

मन्सूर यह सोचता ही रहा कि उसे अपने काका की याद आयी। वह कहीं दूर पर एक छोटे से गाँव में था। उसको मन्सूर ने कभी नहीं देखा था। फिर भी मन्सूर की ज़रूरत को देखते हुए वह शायद चांदी उधार में दे। अगर वह मुफ़्त में भी दे दे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इस आशा से उत्साह में आकर मन्सूर पैदल ही अपनें काका के गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में ही रात हो गयी तो सड़क के किनारे लेट रहा। सबेरे उठकर वह अपने काका के गाँव में पहुँचा। गाँव में क़दम रखते ही एक आदमी सामने आया तो उसने पूछ—"अमुक आदमी का घर कहाँ पर है?"

"इस गली में आगे बढ़ोगे ती दायीं ओर एक घर दिखाई देगा। उस घर की चहार दीवारी थोड़ी-सी टूट गयी है।" घर भी गिरने की हालत में है।" उस आदमी ने मन्सूर को सारा हुलिया बता दिया।

मन्सूर के दिल में अपने काका के मकान को देखने के पहले यह विश्वास था कि उसका काका खूब पैसेवाला है। लेकिन देखता क्या है, घर की चहार दीवारी टूट गयी थी और अहाते में पत्थर-कंकड़ और कूड़ा करकट भरा पड़ा है। घर के सामने एक सफ़ेद गधा बंधा पड़ा था जिसकी

हड्डियाँ निकल आयी थीं। गधे ने मन्सूर की आँखों में बड़ी आशा से देखा। उसकी आँखें यह बता रही थीं कि "क्या मुझे थोड़ा खाना खिलाओगे?"

गधे को देखते ही मन्सूर को उस पर रहम आ गयी। वैसे गधे की उम्र कोई ज्यादा न थी, लेकिन वह खाने के अभाव में सूखकर कांटा हो गया था।

मन्सूर ने बाज़ार में जाकर घास खरीदी। उसे लाकर गधे के आगे डाल दी। गधा रेंककर बड़ी खुशी से झटपट घास खाने लगा। मन्सूर घर के भीतर जाकर अपने काका से मिला। मन्सूर को देख उसका काका यों तो खुश न हुआ। खाने के लिए वह एक रोटी खरीद लाया और उसमें से एक छोट-सा टुकड़ा मन्सूर को देते हुए बोला–"मैं बड़ा गरीब हूँ।"

"मैंने सुना है कि आपके पास बहुत-सा धन है। मैं इसीलिए आपके पास कर्ज़ लेने आया हूँ।" मन्सूर ने कहा।

"कर्ज़ लेने आये हो? मेरे पास है ही क्या, जो तुमको उधार में दूँ? मैं कंगाल जो ठहरा।" काका ने जवाब दिया।

दूसरे दिन वह रवाना होना चाहता था कि उसका काका बोला–"तुम भी हाट

तक मेरे साथ चलो। हाट में इस गधे को बेच डालेंगे। यह किसी काम का नहीं, उल्टे चारे का खर्च उठाना पड़ रहा है।"

दोनों ने गधे को हाट में ले जाकर बेचना चाहा। दस तोले चांदी देकर लोग उसे खरीदने तैयार थे। मगर मन्सूर ने देखा कि वह गधा बड़ी दीनता के साथ देख रहा है। उसकी आँखें मानों यह बता रही थीं–"तुम्हीं मुझे खरीद लो।"

मन्सूर ने आगा-पीछा सोचे विना ही कहा–"काकाजी, यह गधा मुझे ही क्यों नहीं बेचते?"

"अच्छी बात है, बेटा! तुम्ही खरीद लो। बीस तोले चांदी पर मैं तुमको बेचूंगा।" काका ने कहा।

मन्सूर ने सोचा कि काका से मोल-भाव करना ठीक नहीं है। इसलिए कहा– "काकाजी, मेरे साथ मेरे घर चलकर दाम ले लीजिये।"

दोनों मन्सूर के घर पहुँचे। मन्सूर बीस तोले चांदी अपने काका को देकर वह और गरीब बन गया। मन्सूर का काका बीस तोले चांदी कमर में बांधे गाँव लौट रहा था। रास्ते में चोरों ने उसे लूटकर मार डाला।

मन्सूर को जब मालूम हुआ कि उसका काका मर गया है, तब वह अपने सफ़ेद गधे पर काका के गाँव में पहुँचा। क्यों कि अपने काका की अंत्येष्ठि-क्रियायें करने की जिम्मेदारी उसी पर आ पड़ी थी।

मन्सूर ने काका के घर की खोज की। वह सचमुच एक गरीब का ही घर था।

अंत्येष्ठि-क्रियायें समाप्त कर मन्सूर अपने घर लौटना ही चाहता था कि गधे ने घर की दीवार के पास जाकर अपने खुरों से मिट्टी को खोदना शुरू किया।

तुरंत मन्सूर के दिमाग में धन का विचार आया। पड़ोस में जाकर वह एक कुदाल ले आया और उस जगह को खोदने लगा। उसे एक फुट की गहराई में एक पेटी मिली। उसमें कम से कम पाँच हज़ार तोले चांदी थी।

मन्सूर खुशी से नाच उठा। वह उस पेटी को गधे पर लादकर अपने शहर में पहुँचा। पाँच सौ तोलों को अलग से तौलकर उसे अमीना के पिता के पास ले गया।

"अल्लाह की मेहर्बानी है!" ये शब्द कहते अमीना के पिता ने पाँच सौ तोले चांदी ले ली और मन्सूर के साथ अमीना की शादी की।

[२४]

[शिथिलालय के पुजारी के दल ने जांगला को चीते और मगर-मच्छों के हमले से बचाया। उस रात को पहाड़ी तलहटी के पास सोनेवाले शिखिमुखी तथा उसके अनुचरों को इम्भु जाति के लोग बंदी बनाकर अपने गाँव में ले गये। उस जाति के नेता ने कालीमाता को बलि देने के लिए उनसे पूछा कि उनका नेता कौन है। बाद—]

इम्भु जाति के नेता ने शिखिमुखी वग़ैरह से जो सवाल पूछा, उसे सुनते ही शिथिलालय का पुजारी ख़ुशी के मारे उछल पड़ा। उसने सोचा कि इस बार शिखिमुखी कालीमाई की बलि हो जायगा और विक्रमकेसरी को बड़ी आसानी से खतम किया जा सकता है।

"इम्भु नेता! आपको उन लोगों से यह सवाल पूछने की कोई जरूरत नहीं। मालूम हो ही रहा है कि उनका नेता कौन है! शिखिमुखी शिथिलालय के नाम पर धन का लोभ देकर बाक़ी तीनों को यहाँ तक ले आया है।" शिथिलालय के पुजारी ने कहा।

पुजारी की बातें सुनकर इम्भु जाति के नेता ने उसकी ओर क्रोध से देखा। इम्भु जाति के मांत्रिक ने अपने हाथ के मंत्रदण्ड को पुजारी की पीठ पर चुभोते

यह सरासर गलत है। हम लोग महाराजा विक्रमकेसरी की खोज में इस प्रदेश में आये हैं। हमें यह समाचार मिला कि वे इसी प्रांत में कहीं हैं।"

'विक्रमकेसरी' का नाम सुनते ही इभ्यु जाति का नायक चौंक पड़ा। इसे भांपकर पुजारी बोल उठा—"इभ्यु नायक! मैं आपकी अनुमति लेकर बोल रहा हूँ। महाराजा विक्रमकेसरी की बात तो बहुत पुरानी है। इन लोगों ने कहीं उनका नाम सुन लिया है। उस नाम को लेकर ये लोग कोई छल-कपट करना चाहते हैं। ये लोग वास्तव में शिथिलालय के सोने व चाँदी को लूटने आये हैं।"

हुए कहा—"तुमको हमारी जाति के नेता की अनुमति लेकर बात करनी है! इतनी भी तमीज़ तक नहीं जानते?"

पुजारी ने धीरे से कराहकर अपनी पीठ पर हाथ फेर लिया। इभ्यु जाति के नेता ने फिर शिखिमुखी और विक्रमकेसरी की ओर गंभीरता के साथ देखते हुए वही प्रश्न दुहराया। विक्रमकेसरी कोई जवाब देने जा रहा था, इतने में शिखिमुखी ने उसको रोकते हुए कहा—"पुजारी के कहे मुताबिक़ मैं इन सब का नेता हूँ। लेकिन जैसे वह सोचता है कि मैं इनको धन का लोभ देकर यहाँ तक ले आया हूँ,

इभ्यु जाति का नेता सर हिलाते एक-दो क्षण मौन रहा। फिर शिखिमुखी से बोला—"तुम लोगों के बारे में मैं सब-कुछ जानता हूँ। ज्यादा बकवास मत करो। बताओ, तुम्हारा नेता कौन है?"

"मैंने कह दिया कि मैं ही नेता हूँ! मेरा नाम शिखिमुखी है!" यह कहते शिखिमुखी ने एक क़दम आगे बढ़ाया।

विक्रमकेसरी ने उसका कंधा पकड़कर झकझोरते हुए रौद्र स्वर में कहा—"मैं राजबंशी क्षत्रिय हूँ! यह जंगली मेरा नेता

कैसे हो सकता है? इन तीनों का नेता मैं हूँ! मेरा नाम विक्रमकेसरी है! काली माता के लिए मेरी बलि दीजिये। लेकिन मेरी बलि होने के पहले मैं तुम लोगों में से कुछ लोगों की ज़रूर बलि लूंगा।"

शिथिलालय का पुजारी अट्टहास करते हुए बोला—"कैसा छल है! ये अपने को विक्रमकेसरी बताकर झूठ बोल रहा है! उल्टे कहता है कि यह इभ्यु जातिवालों की बलि भी लेगा!"

विक्रमकेसरी की बातों से इभ्यु जाति का नेता एकदम नाराज़ हो उठा। वह अपने अनुचरों को सावधान करते हुए बोला—"लगता है, ये शिखिमुखी और विक्रमकेसरी बड़े ही खतरनाक मालूम होते हैं। तुरंत कालीमाता को इन दोनों की बलि दीजिये। बाक़ी दोनों के बारे में बाद को सोचेंगे। चलो कालीमाता के मंदिर में।" ये शब्द कहते इभ्यु जाति का नेता अपने आसन से उठकर चल पड़ा।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने एक दूसरे की आँखों में देखा। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि इभ्यु जाति के नेता से चर्चा करना बेकार है। उनकी मौत निश्चित है! परंतु उन्हें यह चिंता सताने लगी कि उनके साथ आये अजित और वीरभद्र नाहक़ खतरे में पड़ जायेंगे।

इभ्यु जाति के नेता के पीछे सब लोग गोलकुटीर से बाहर आये। प्रधान मार्ग से चलते हुए गाँव के बाहर एक ऊँचे प्रदेश में स्थित कालीमाता के मंदिर में पहुँचे।

इभ्यु जाति का मांत्रिक अपने हाथ में तलवार लिये कालीमाता की भयंकरमूर्ति के सामने जा खड़ा हुआ। इसके बाद ऊँची आवाज़ में मंत्र पढ़कर बोला—

"शिखिमुखी और विक्रमकेसरी के बंधन खोलकर कालीमाता के सामने ले आइये।"

मांत्रिक का आदेश सुनकर शिथिलालय के पुजारी को बड़ी खुशी हुई। उसने इम्यु जाति के नेता के निकट पहुँचकर सलाह दी कि शिखि और विक्रम के साथ अजित और वीरभद्र की भी बलि दे देना ठीक होगा। इस पर इम्यु जाति के नेता ने सर हिलाया। उसकी दृष्टि विक्रमकेसरी पर केन्द्रित थी। विक्रमकेसरी के चेहरे पर उसके परिचित व्यक्ति की रूपरेखाएँ साफ़ नजर आ रही थीं।

पहाड़ी तलहटी के पास इम्यु जाति के दल के जिस नेता ने शिखि और विक्रम को बंदी बनाया था, उसने उन दोनों के कंधे पकड़कर मांत्रिक के सामने ढकेल दिया। मौक़ा पाकर विक्रमकेसरी ने मुट्ठी बाँध उस दल के नेता के सर पर प्रहार किया।

चोट खाकर इम्यु दल का नेता नीचे गिर पड़ा। इसी समय शिखिमुखी ने मांत्रिक को लात मारी। मांत्रिक ज़ोर से चिल्लाकर नीचे गिर पड़ा। उसके हाथ की तलवार उछलकर नीचे गिर गयी। शिखिमुखी उस तलवार को अपने हाथ में लेने ही वाला था कि इतने में दो इम्यु दल के सेवक और शिथिलालय के पुजारी के एक नौकर ने शिखिमुखी के हाथ कसकर पकड़ लिये। विक्रमकेसरी शिखी की मदद करने गया तो उस पर चार इम्यु सेवकों ने हमला किया।

इस भगदड़ को देख इम्यु जाति के नेता को क्रोध और आश्चर्य भी हुआ। वह क्रोध से गरजते हुए, मूँछों पर ताव दे शिखिमुखी के निकट गया। उसकी गर्दन पकड़कर चिल्ला पड़ा—"कालीमाता के सामने तुमने जो अपराध किया, इसके

लिए तुम्हारा शरीर टुकड़े-टुकड़े करवा दूंगा और विक्रमकेसरी का भी..."

इम्यु जाति के नेता की बात पूरी भी न हो पायी थी कि शिखिमुखी ने धक्का देकर अपनी गर्दन को उसकी पकड़ से छुड़ा लिया। इस धक्कम-मुक्खी में शिखिमुखी की गर्दन में लटकनेवाला-रक्षा-पदक टूट गया और इम्यु जाति के नेता के हाथ में आया।

रक्षा-पदक पर कालीमाता के चित्र को देखते ही इम्यु जाति का नेता पल भर के लिए चकित रह गया। फिर संभलकर बोला–"इन दोनों की कोई हानि न करो। मुझे कुछ विचित्र-सा मालूम होता है..." ये शब्द कहते उसने रक्षा-पदक को उलट-पलटकर देखा।

शिथिलालय का पुजारी यह सोच रहा था कि कुछ ही क्षणों में शिखिमुखी और विक्रम की काली माता के सामने बलि दी जायगी, पर इम्यु जाति के नेता की बातों ने उसे निराश में डाल दिया। पुजारी सकुचाते हुए नेता के पास गया। उसकी भुजा पर झुककर रक्षा-पदक को देख दांत पीसने लगा।

"इम्यु नेता! यह सरासर धोखा है। देवता के प्रति द्रोह है। इस मंदिर में
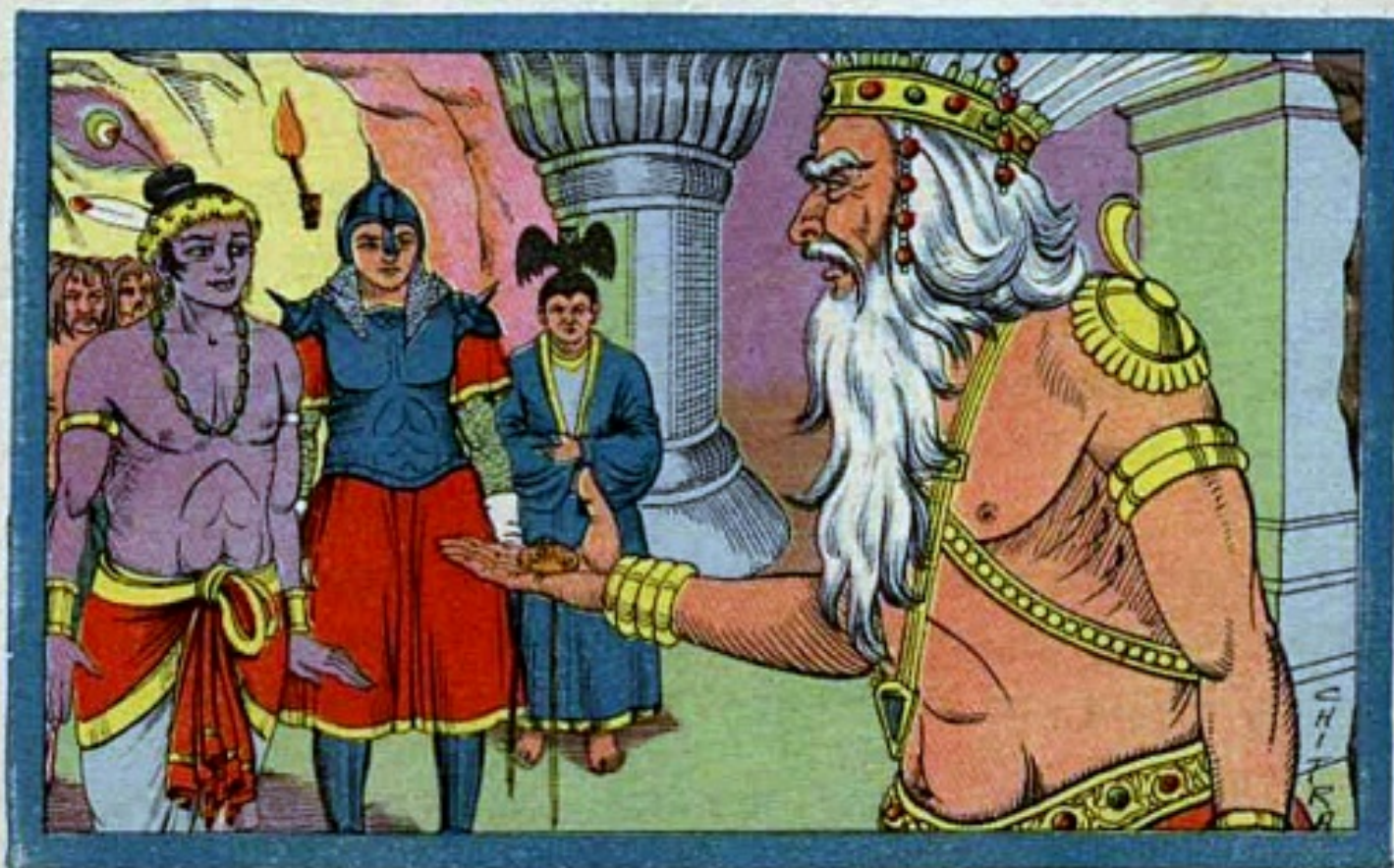
स्थित पवित्र काली माता की इन नास्तिकों ने नक़लें तैयार कीं और उन्हें अपने गले में बांध घूम रहे हैं। यह कैसा अन्याय और पाप है।" ये शब्द कहते पुजारी शिखिमुखी पर हमला करने लगा।

इम्यु जाति के नेता ने उसे अपने हाथ से ढकेल कर कहा–"तुम अपनी बकवास बंद करो।" फिर शिखीमुखी की ओर मुड़कर पूछा–"यह रक्षा-पदक तुमको कहाँ से मिला है?"

शिखीमुखी ने दांत पीसते हुए इम्यु नेता से कहा–"चाहे यह रक्षा-पदक मुझे कहीं से भी मिला हो, तुम्हें बताने की क्या जरूरत है? इस तांबे के टुकड़े के बारे में तुमको जानने के लिए कुछ नहीं है।"

"देवता के द्रोही! यह तांबे का टुकड़ा है? जगज्जननी कालीमाता का तुम अपमान करते हो? देखते क्यों हो तुम सब? इसका सर काट डालो!" शिथिलालय का पुजारी गरज उठा।

इम्यु नेता ने आँखें लाल करके पुजारी की ओर ताकते हुए कहा–"तुम इम्यु जाति के ज़रूर हो, लेकिन किन्ही दुष्ट शक्तियों को पाने के लिए तुमने क्षुद्र देवताओं की उपासना की, इसीलिए तुमको मैंने अपनी जाति से बहिष्कार किया। ऐसे कमीने तुम यहाँ पर अपना अधिकार जताना चाहोगे तो मैं पहले कालीमाता को तुम्हारी ही बलि दूंगा।"

इम्यु नेता की चेतावनी पाकर पुजारी घबरा गया। उसने पीछे की ओर मुड़कर अपने अनुचरों को इशारा किया। सबने उसे घेर लिया। इम्यु नेता की बातें और रक्षा-पदक का उसके परिशीलन करते शिखीमुखी को आश्चर्य हुआ। उसे तुरंत यह बात याद आयी कि वह रक्षा-पदक विक्रमकेसरी के दादा की ताड़पत्रोंवाली पेटी में मिला है। अलावा इसके उसके मन

में यह आशा भी बंध गयी कि उस रक्षा-पदक की मदद से वे लोग बच भी सकते हैं।

शिखिमुखी ने देखा कि विक्रम गहरी सोच में पड़ा हुआ है। उसने झट इम्यु नेता की ओर मुड़कर कहा-"इम्यु नेता! तुम्हारी बातों से मैंने अभी अभी समझ लिया कि तुम्हारे दिल के किसी कोने में मानवता बची है। यह पुजारी बड़ा दुष्ट और नीच आदमी है। इस रक्षा-पदक को हमारे महाराजा विक्रमकेसरी को किसीने भेंट दिया है। इसे उन्होंने अपने ताड़-पत्रों में छोड़ दिया था। उस पेटी में से निकाल कर महाराजा विक्रमकेसरी के पुत्र राजा जयपाल ने खुद मेरे गले में बांध दिया था।"

शिखिमुखी की बातें सुनकर इम्यु नेता चौंक पड़ा। एक बार उसने शिखिमुखी और विक्रमकेसरी की ओर ध्यान से देखा। तब एक ही छलांग में विक्रमकेसरी के निकट पहुँचकर उसका आलिंगन करते हुए बोला-"तुम महाराजा विक्रमकेसरी के पोते हो? हमारी जाति को हैजे के प्रकोप के शिकार होते देख उस महाराजा ने हमारी रक्षा की है। मैं उनके वंश के राजकुमार के साथ कैसा द्रोह करनेवाला था।" ये शब्द कहते उसकी आँखों में आँसू आ गये।

अपने नेता के मुँह से ये बातें सुनते ही वहाँ पर इकट्ठे हुए इम्यु लोग तथा मांत्रिक भी आगे आकर हाथ बाँध खड़े हो गये।

इम्यु नेता ने शिखिमुखी को निकट बुलाया। आदरपूर्वक उसके कंधे पर हाथ रखा। रक्षा-पदक को पुनः उसके गले में बांधते हुए बोला-"तुम जिस काम से आये हो, वह मैं खुद समझ गया। तुम लोग इस संदेह से उस महाराजा की खोज करने आये हो कि शायद वे जीवित हों! लेकिन वे कहीं पहाड़ों में विषैले बुखार से बहुत समय तक पीड़ित रहकर मर गये हैं। इसलिए उनके मृत शरीर को मंगा कर

हमने हमारे पुरखों की क़ब्रों के पास उनकी समाधि की। यह रक्षा-पदक मैंने ही कृतज्ञतापूर्वक उस महानुभाव को दिया था।"

इम्भ्यु नेता की बातों पर हँसकर शिखिमुखी बोला—"आपने हमारी बातें बिलकुल सुने बिना ही हमारी बलि देनी चाही। आपको गलत फ़हमी में डालने वाला व्यक्ति यह बदमाश शिथिलालय का पुजारी है। पहले उसे पकड़कर बंदी बनाइये। उसने हमारे और आपके साथ भी बड़ा द्रोह किया है।"

इम्भ्यु नेता ने दांत पीसते हुए अपने अनुचरों की ओर मुड़कर कहा—"वह दुष्ट कहाँ पर है? उसे पकड़ लाओ और काली माता की बलि दे दो।"

इम्भ्यु लोगों ने मंदिर में चारों ओर देखा। वहाँ पर पुजारी और उसके अनुचर नहीं थे। इम्भ्यु नेता के साथ सब लोग चिल्ला पड़े—"उस नीच को पकड़ लो।" तब सब लोग पुजारी की खोज में मंदिर से बाहर दौड़े आये।

कालीमाता के मंदिर के टीले के पास एक बड़ा पहाड़ है। उस पर शिथिलालय का पुजारी और उसके अनुचर खड़े दिखाई पड़े। मंदिर से बाहर आये हुए लोगों को देख अट्टहास करते हुए पुजारी बोला—"यह महान शक्तिवाला कहीं तुम लोगों के हाथों में आ सकता है! इतने सालों के बाद मुझे मालूम हो गया कि शिथिलालय कहाँ पर है? अगर तुम लोगों में हिम्मत है तो वहाँ पर आ जाओ। वहीं पर हम लोग फ़ैसला करेंगे।" पुजारी फिर चिल्ला पड़ा।

इम्भ्यु नेता अपने अनुचरों से बोला—"उस नीच को जो आदमी जान से पकड़ लायगा, मैं उसके साथ अपनी दसवीं पत्नी की छोटी लड़की के साथ उसका विवाह करूँगा।" इस पर इम्भ्यु जाति के युवक और अधेड़ उम्र के लोग शेरों की भांति गरजते हुए पुजारी के खड़े पहाड़ की ओर दौड़ पड़े। (और है)

नसीब

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन्, मानव अंधे हो अपने नसीब को बदलने का प्रयत्न करते हैं, मगर उसमें वे असफल हो जाते हैं। इसके प्रमाणस्वरूप मैं तुमको गुणांक नामक राजा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए यह कहानी सुनो।"

बेताल यों कहने लगा—"लावणापुर का राजा गुणांक एक बार घने जंगल में शिकार खेलते दूर निकल गया। इतने में अंधेरा फैल गया। उस रात को उसे जंगल के एक शिकारी की झोंपड़ी में शरण लेनी पड़ी। उस झोंपड़ी में शिकारी, उसकी पत्नी और सात दिन पहले पैदा हुई एक लड़की थी।

वेताल कथाएँ

शिकारी ने राजा को नहीं पहचाना। लेकिन उसने आगंतुक का स्वागत किया, रूखा-सूखा खिलाकर उसके लेटने के लिए जानवरों के चमड़े बिछाये। मखमल की गद्दी पर सोनेवाले राजा को उस ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर नींद न आयी। आधी रात बीतने के बाद उसको नींद लगी। उस नींद में राजा ने एक सपना देखा। उस सपने में कोई बोला–"राजन्, इस झोंपड़ी में रहनेवाली छोटी बच्ची तुम्हारी होनेवाली बहू है। यह एक अपूर्व सुंदरी होगी।"

राजा चौंककर उठ बैठा। इस शिकारी की लड़की उसकी बहू बनेगी? उसके शरीर में प्राण के रहते ऐसा नहीं हो सकता। अगर यह विधि का विधान है तो उसे बदलने की ताक़त उस में है।

सवेरा होने पर राजा जब अपनी राजधानी को लौटने लगा तब वह शिकारी से बोला–"मैं इस देश का राजा हूँ। तुम्हारी लड़की इस जंगल में रहकर क्या सुख भोग सकती है? अगर तुम इस लड़की को मुझे दोगे तो मैं उसे राजमहल में ले जाऊँगा। उसे पाल-पोसकर बड़ा करके तुम्हारा ऋण चुकाऊंगा।"

राजा की बातें सुनकर शिकारी ने तुरंत हाथ मलते हुए कहा–"सरकार, आपकी जैसी इच्छा हो, वैसा ही करें।" शिकारी की पत्नी ने उस बच्ची को राजा के हाथों में सौंप दिया। उस शिशु को लेकर राजा चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर राजा ने उस शिशु को एक झाड़ी में फेंक दिया और यह कहते आगे बढ़ा–"अब देखूंगा, तुम मेरी बहू कैसे बन सकती हो?"

थोड़ी देर बाद उधर से एक किसान निकला। उसे झाड़ी के बीच एक शिशु का रोना सुनाई दिया। झाड़ी के पास कपड़ों में एक शिशु लपेटा हुआ मिला। उस किसान के कोई संतान न थी।

शिशु को देखते ही उसे बड़ी खुशी हुई। उसने उस लड़की को ले जाकर अपनी पत्नी के हाथ दिया। उस लड़की का वाणी नामकरण किया गया।

एक दिन राजा कहीं जा रहा था। रास्ते में किसान का वह गाँव आया। किसान ने राजा को अपने घर ले जाकर बढ़िया दूध दिया। राजा ने किसान के घर वाणी को देख कहा–"तुम्हारी लड़की बड़ी सुंदर मालूम होती है।"

"महाराज, वाणी मेरी सगी पुत्री नहीं है। तीन साल पहले यह लड़की मुझे जंगल की एक झाड़ी में मिली। किसी ने इसे फेंक दिया था। फिर भी हम इसे अपनी ही पुत्री मानकर पाल-पोस रहे हैं।" किसान ने सारी कहानी सुनायी।

राजा का दिल काँप उठा। उसने सोचा था कि शिकारी की लड़की कभी की मर गयी होगी। लेकिन ऐसा न हुआ। इसका मतलब है कि नसीब के साथ उसकी होड़ लग रही है। इस होड़ में उसे सफल होना है।

"मैं इस लड़की को पालूँगा। हमारे रनिवास में यह बहुत ही सुखी रहेगी। क्यों, इसे मुझे दे सकते हो?" राजा ने किसान से पूछा। किसान और उसकी पत्नी की यह

इच्छा कदापि न रही कि लड़की को राजा को दे। फिर भी वे राजा का तिरस्कार न कर सके। तब किसान ने कहा–"आपकी इच्छा जैसी हो, वैसा ही करें।"

राजा वाणी को साथ लेकर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर एक नदी आयी। राजा उस लड़की को नदी में फेंककर अपने रास्ते चला गया। वाणी पानी में बहती गयी। पड़ोसी राज्य में उस नदी का एक घाट था। उस देश की रानी नदी में नहाने आयी हुई थी। रानी ने देखा कि कोई लड़की बहती जा रही है। रानी ने उसे अपने नौकरों से निकलवा दिया।

लड़की जब होश में आयी, तब रानी ने पूछा–"बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?" लड़की ने अपना नाम वाणी बताया।"

रानी उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो गयी। रानी के कोई लड़की न थी। इसलिए उसने वाणी को अपनी बेटी के समान पाल-पोसकर बड़ा किया। जब वाणी बड़ी हुई तब उसकी सुंदरता और निखर आयी।

कुछ साल और बीत गये। एक बार लावणापुर का राजकुमार उस देश में आया। राजकुमार वाणी को देख मुग्ध हुआ और उसने वाणी के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। रानी ने राजकुमार से सच्ची बात बतायी–"यह लड़की मेरी पुत्री नहीं है। यह जब तीन साल की थी, तब नदी में बहती जा रही थी, मैंने निकलवाया, घर लाकर पाला-पोसा और बड़ा किया। अगर तुमको इस लड़की की जाति से कोई आपत्ति न हो तो तुम इसके साथ शादी कर सकते हो!"

"मैं अपने पिता की अनुमति लेकर इस युवती से शादी करूँगा। बाणी आपकी पुत्री भले ही न हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" राजकुमार ने रानी से कहा।

इसके बाद घर लौटकर उसने सारी बातें अपने पिता से कहीं। राजा गुणांक ये बातें सुनकर चकित रह गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि विधि का हाथ इतना जबर्दस्त होता है। उसने अपने पुत्र से कहा—"मैं तुमको उस लड़की के साथ शादी करने की अनुमति नहीं दे सकता। तुम गद्दी के हक़दार हो। ऐसी हालत में जिस लड़की की जात का पता नहीं, उस लड़की के साथ तुम शादी कैसे कर सकते हो?"

राजकुमार ने अपने पिता का विरोध करते हुए कहा—"अगर मुझे वाणी के साथ शादी करने में आप का सिंहासन बाधा डालता है तो मुझे उस सिंहासन की ज़रूरत ही नहीं। मैंने जिस लड़की को वर लिया, उस कन्या के साथ ज़रूर विवाह करूँगा। परंतु आप याद रखिये, जब तक आप इस देश में मेरा स्वागत न करेंगे, तब तक मैं इस देश में क़दम तक न रखूँगा।" यह कहकर राजकुमार चला गया।

राजा ने समझ लिया कि नसीब की परीक्षा में वह हार गया। इसलिए वह अपने पुत्र के विवाह में हाज़िर हुआ। विवाह-वेदिका पर अपने पुत्र और पुत्रवधू को देखते ही उसे आश्चर्य हुआ। उसे

लगा कि वाणी जैसी सुंदर व राजसी स्वरूपवाली बहू उसे ज़िंदगी भर ढूंढ़ने पर भी मिल नहीं सकती। उस विवाह में भाग लेने के लिए अनेक राजा हाज़िर हुए थे। सब ने वाणी की सुंदरता की प्रशंसा की। राजा की समझ में न आया कि इतने सालों से इस विवाह को रोकने का उसने अनेक प्रयत्न क्यों किये? विवाह के बाद राजा गुणांक अपने पुत्र और बहू को अपनी राजधानी में ले गया। जंगल में रहनेवाले शिकारी और उसकी पत्नी को बुलवा कर कहा—"लो, यही तुम्हारी लड़की! आज मेरी बहू बन गयी है।"

इसके बाद किसान और उसकी पत्नी को बुलवा भेजा। उनसे कहा–"तुम लोगों ने इसी कन्या को पाला-पोसा। मैंने अपने पुत्र के साथ इसका विवाह किया है।" उन सबको भी राजा ने अपने नगर में ठहरने का उचित प्रबंध किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, विधि का विधान जानते हुए भी गुणांक ने उसे बदलने का श्रम क्यों उठाया है? क्या इस विश्वास से कि वह विधि को बदल सकता है! ऐसा व्यक्ति आखिर विधि के विधान को क्यों स्वीकार करता है! इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने उत्तर दिया–"मानव जो भी प्रयत्न करता है, अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए ही। समर्थ व्यक्ति कोई भी परिस्थितियों के सामने सर नहीं झुकाता। राजा गुणांक को विधि का विधान पहले ही मालूम हो गया था, इसलिए उसे बदलने का उसने हठ किया। उसे अगर पहले यह मालूम न होता कि शिकारी की लड़की उसकी बहू बनेगी, तो कोई आपत्ति न उठाता। उस समय वाणी राजा की बहू बनने के योग्य ही दीख रही थी। मगर शिकारी के घर रहनेवाली वह छोटी-सी बच्ची राजा की बहू बनने योग्य कदापि न थी। दूसरी बात यह है कि विधि के विधान के अनुसार विवाह संपन्न होने के लिए राजा गुणांक ही दो बार साधन बना। इस प्रकार विधि के हाथ का खिलौना बनने में बड़े से बड़े व्यक्ति के लिए भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सर्वनाश

शबरवन में एक किसान रहता था। खेती करने के ख्याल से वह सारा जंगल घूम रहा था कि उसे एक जगह मकई और कंद पैदा करने लायक़ अच्छी ज़मीन नज़र आयी। पास में ही एक नदी बह रही थी। उससे सटे पहाड़ थे। उस ज़मीन की उत्तरी दिशा में एक जंगल था।

दूसरे दिन किसान उस ज़मीन के झाड़-झंखाड़ों को काटने के ख्याल से कुदाल और कुल्हाड़ी लेकर पहुँचा। वह झाड़ काटने में लग गया।

"झाड़ कौन काट रहा है?" उसे यह सवाल सुनाई पड़ा।

किसान ने चकित होकर चारों ओर नज़र डाली, मगर उसे कोई दिखाई न दिया। वह चौंक पड़ा, लेकिन यह सोचकर फिर पेड़ काटने में लग गया कि कहीं वह भ्रम में पड़ तो नहीं गया है!

"कौन पेड़ काट रहा है!" यह सवाल फिर सुनाई दिया। इस बार यह आवाज़ उसे दक्षिणी दिशा से सुनाई दी।

"मैं पास की घाटी में रहनेवाला किसान हूँ। खेती करने के लिए ज़मीन साफ़ कर रहा हूँ।" किसान ने बड़ी हिम्मत के साथ उन अज्ञात कंठों को जवाब दिया।

"अच्छी बात है, हम भी तुम्हारी मदद करेंगे।" उन कंठों ने जवाब दिया।

दूसरे ही क्षण उसने देखा कि पेड़-पौधे जड़ सहित उखड़कर नीचे गिरते जा रहे हैं। देखते-देखते उसका सारा खेत एक दम साफ़ और समतल हो गया।

किसान ने सोचा था कि सफ़ाई का काम कई दिन लगेगा, लेकिन कुछ ही

गोपीनाथ वर्मा

घड़ियों में समाप्त होते देख वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने जंगल की ओर देखते कृतज्ञतापूर्वक कहा–"तुम लोगों का उपकार मैं कभी भूल नहीं सकता।" ये शब्द कहकर वह अपना घर चला गया।

किसान की पत्नी ने खाना परोसते हुए पूछा–"खेत का काम ठीक से चल रहा है न?"

"ठीक से क्या, मैंने अपनी ज़िंदगी में ऐसा काम न देखा था!" किसान ने जवाब दिया।

"खेत कहाँ पर बना रहे हो?" किसान की पत्नी ने पूछा, पर उसने कोई जवाब न दिया।

दूसरे दिन किसान ने खेत में जाकर घास-पूस को जला डाला।

"कौन यह घास जला रहा है!" फिर कई कंठ सुनाई दिये।

"मैं किसान हूँ! सूखी घास और झाड़ जला रहा हूँ।" किसान ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है, हम भी तुम्हारी मदद करेंगे।" सभी कंठों ने एक साथ इस बार भी उत्तर दिया।

दूसरे ही क्षण खेत में गिरे झाड़, घास सब के ढेर लगने लगे। सब ढेर एक साथ जल उठे। किसान ने घर लौटते हुए अपने अज्ञात मददगारों को धन्यवाद दिये।

तीसरे दिन किसान खेत जाकर पेड़ों की लकड़ियाँ काटकर मेंडों पर सजाने लगा ।

"कौन लकड़ी काट रहा है?" कई कंठ एक साथ पूछ उठे ।

"मैं किसान हूँ । पेड़ों की लकड़ियाँ जलावन के लिए काट रहा हूँ ।" किसान ने कहा ।

दूसरे ही पल में पेड़ सब जलावन बन गये । इस बार किसान कुदाल लेकर पेड़ों की जड़ खोदने लगा तो उसे लगा कि मानों सैकड़ों आदमी जड़ खोद रहे हैं । सारी जड़ें थोड़ी देर में उखड़ गयीं ।

एक दिन किसान हल जोतने गया, तो थोड़ी ही देर में सारा खेत जुत गया । उसने आधे खेत में मकई और आधे में कंद बोना चाहा, मगर आश्चर्य की बात थी कि कोई वह काम भी पूरा कर चुका था ।

इसके बाद किसान रोज खेत में जाता, मकई के भुट्टों और कंद को देख खुशी से फूल जाता । जैसे उसने सोचा था, वैसे वह खेत मकई और कंद के अनुकल था । खेत एक दम हरा-भरा और देखने में मनमोहक था । खेत में निराई करने की जरूरत न पड़ती, कोई वह काम भी पूरा कर देता था ।

किसान की पत्नी को लगा कि उसका पति खेत का काम नहीं कर रहा है । जंगल काटकर खेती करना कोई मामूली काम नहीं है । बीज बोने के बाद निराई करनी पड़ती है । लेकिन उसका पति कभी थककर घर न लौटा था ।

"तुमने खेत कहाँ बनाया ? मैं बार-बार पूछती हूँ तो तुम क्यों जवाब नहीं देते ?" किसान की पत्नी ने अपने पति से पूछा ।

"कहीं है, तुम्हें क्या मतलब ?" किसान ने डांट बतायी । उसका डर था

कि देवता उस पर मेहर्बानी करके मदद कर रहे हैं। अगर उसकी पत्नी खेत पर जायगी तो ऐसा काम कर बैठेगी जिससे वे लोग शायद नाराज़ हो जायें।

एक दिन किसान ने खेत में जाकर देखा। मकई के भुट्टों के पकने और कंद के खाने लायक़ बनने में अभी दो-तीन सप्ताह का समय है। तब कहीं जाकर उसे अपनी मेहनत का फल मिलेगा।

यह सोचकर मारे खुशी के किसान गीत गाते पगडंडी से होकर घर लौटने लगा। घर के नज़दीक पहुँचते ही उसकी पत्नी सामने आयी और बोली–"वाह, गीत तो बढ़िया है! मगर यह सोचो कि आज खाना बनाने के लिए जलावन नहीं हैं! फिर आराम से गा सकते हो, पहले लकड़ी का इंतज़ाम तो करो।"

"झाड़ियों में जाकर सूखी लकड़ियाँ बीन लाओ न। यह काम भी मुझ ही को करना है?" किसान ने खीझते स्वर में कहा।

"तुमने जब खेत की सफ़ाई की, तब झाड़-झंकाड़ काट दिये होगे न? सूखी लकड़ियाँ बीन लाने की क्या जरूरत है? अब भी सही, तुम खेत का पता बताओगे या मैं अपने मायके चली जाऊँ?" किसान की पत्नी ने धमकी दी।

"क्यों नहीं बताऊँगा, इसमें कोई राज थोड़े ही है?" यह कहकर किसान ने अपनी पत्नी को खेत का उलिया बताया और बोला—"सुनो, जल्दी जलावन लेती आओ, वरना रसोई बनाने में देरी होगी, समझीं! एक बात और सुनती जाओ तो! तुम से कोई सवाल करे तो उसका कोई जवाब न दो! ऐसा अभिनय करो, मानों तुमने सुना ही न हो!"

किसान की औरत ने खेत में जाकर देखा। उसे फ़सल बड़ी अच्छी लगी। उसने एक भुट्टा तोड़कर देखा और मन में गुनगुनाया—"इसे और पकना है।"

इतने में उसे कोई स्वर सुनायी पड़ा—"कौन भुट्टे तोड़ रहा है?"

अपने पति की चेतावनी भूलकर वह औरत बोल उठी—"तुम कौन होते हो, मुझसे पूछनेवाले? यह खेत हमारा है।"

उसी वक़्त उस औरत की नज़र कंदों पर पड़ी। उसने झट एक कंद उखाड़कर देखा।

"कंद उखाड़नेवाले कौन है?" फिर सवाल सुनाई पड़ा।

"हम अपने कंद उखाड़ते हैं तो पूछनेवाले तुम कौन होते हो?" किसान की पत्नी ने कहा।

"अच्छी बात है, हम भी तुम्हारी मदद करेंगे।" कोई अज्ञात स्वर सुनाई पड़ा।

दूसरे ही पल में खेत के सारे भुट्टे टूटकर ढेर हो गये। कंद सब उखड़कर बाहर आये।

किसान की पत्नी एक दम काँप उठी। जलावन लेना भी भूलकर वह घबराहट के मारे घर लौट आयी। पति के कारण पूछने पर उसके मुँह से बोल तक न फूटे।

किसान ने जाकर अपना खेत देखा तो उसका सर्वनाश हो चुका था!

पैसे का जाल

एक गाँव में एक किसान था। कुछ समय बाद किसान और उसकी औरत भी थोड़े दिनों के अंतर से मर गये। उनके तीन बेटे थे।

"यह घर मेरे हिस्से का है।" बड़े ने कहा।

"खेत मेरे हिस्से में है।" दूसरे ने कहा।

"तो मेरे हिस्से का क्या है?" तीसरे ने अपने बड़े भाइयों से पूछा।

सारे घर की तलाशी लेने पर अटारी पर एक बड़ा रस्सा दिखाई पड़ा। "तुम इस रस्से को ले जाकर इसकी मदद से जीओ।" बड़े भाइयों ने छोटे को सलाह दी।

छोटा भाई बड़ा उत्साही था। उसने कहा–"बड़ी अच्छी बात है। मैं ऐसे ही जीऊँगा।" यह कहकर रस्सा कँधे पर डाल छोटा भाई चला गया।

जब छोटा भाई गाँव पारकर जंगल से जाने लगा तब उसे जंगली जानवर दिखाई दिये। उसने रस्से से एक जाल बुनकर एक गिलहरी और एक खरगोश को पकड़ा। लकड़ियों से एक पिंजड़ा बनाकर उस में गिलहरी और खरगोश को रख दिया। फिर वह आगे बढ़ा तो सामने एक तालाब पड़ा। वहाँ पर उसे झाड़ियों में घुसने वाला एक भालू दिखाई दिया।

छोटे भाई के दिमाग में यह विचार आया कि उस रस्सी से और भी छोटे-बड़े जाल बुनकर कई जानवर फँसाये जा सकते हैं। यह सोचकर वह एक पेड़ के नीचे जा पहुँचा और जाल बुनने लगा।

उस तालाब में एक जल-राक्षस रहता था। उसने पानी में से सर उठाकर किनारे बैठे हुये उस युवक को देखा। लेकिन उसकी समझ में न आया कि वह युवक क्या कर रहा है।

जल-राक्षस पानी के तल में चला गया। अपने बेटे को बुलाकर आदेश दिया–

सुखदेव

"बेटा, तालाब के किनारे बैठकर कोई युवक कुछ कर रहा है। यह पता लगाकर लौटो कि असल में वह कर क्या रहा है?"

जल-राक्षस का बेटा तालाब से बाहर आया। उस युवक के सामने जाकर पूछा– "अब तुम यहाँ बैठे क्या करते हो?"

छोटे भाई ने सर उठाकर देखा। उसने समझ लिया कि सामने जल-राक्षस खड़ा है! उसने जल-राक्षसों के बारे में इसके पहले ही सुन रखा था। वे बेवकूफ़ होते हैं, लेकिन उनके सामने झुक गये तो बस मौत को बुलाने में देरी न लगती।

उसने बड़ी निड़रता के साथ जवाब दिया–"देखते नहीं हो? मैं जाल बुन रहा हूँ। मैं तालाब में जाल डालकर उसे पकड़ना चाहता हूँ। तुम लोग इस तालाब को छोड़ और कहीं जाओ!"

जल-राक्षस का बेटा अपने बाप के पास पहुँचा और बोला–"बाबूजी, वह जवान कहता है कि वह तालाब में जाल डालकर उसे पकड़ना चाहता है। इसलिए हमको इसे छोड़ और कहीं जाना है।"

"अरे, बड़ी आफ़त में पड़ गये, मगर सुनो, तुम फिर उसके पास पहुँचकर कह दो कि वह तुम्हारे साथ पेड़ चढ़ने की होड़ लगावे। उस होड़ में वह हार जायगा। तब तुम उसे तालाब में ढकेल दो।" जल-राक्षस ने अपने बेटे से कहा।

छोटे जल राक्षस ने उस जवान के पास जाकर पूछा–"मुझ से होड़ लगा कर क्या तुम पेड़ पर चढ़ सकते हो?"

"अरे, देखते नहीं हो, मैं काम पर लगा हूँ। चाहो तो तुम्हारे साथ मेरा छोटा भाई होड़ लगायगा।" यह कहते उस जवान ने पिंजड़े में से गिलहरी को छोड़ दिया। जल-राक्षस के पलक मूँदने की देरी थी, बस, गिलहरी पेड़ पर जा बैठी। छोटे राक्षस ने अपने पिता के पास जाकर अपनी हार बतायी।

जल-राक्षस के बेटे ने इस बार भी अपने बाप के पास जाकर अपनी हार बतायी।

"यह कोई आफ़त का परकाला मालूम होता है! मैं समझता हूँ कि वह ताक़त में तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकेगा। उसे कुश्ती के लिए ललकारो। इस बार जरूर ही उसे हरा करके तालाब में ढकेल दो।" जल-राक्षस ने अपने बेटो को उपाय बताया।

जल-राक्षस का बेटा उस जवान के पास फिर लौट आया। इस बार गरजते हुए ललकारा–"तुम में हिम्मत हो तो मेरे साथ कुश्ती लड़ो।"

"अबे, तुम्हारे साथ खेल-कूद करने की मुझे फ़ुरसत ही कहाँ है? मेरे बूढ़े दादा उस झाड़ी में सो रहे हैं। चाहो तो उसके साथ कुश्ती लड़ो। वे नींद की खुमारी में हैं। फिर भी तुम्हारा जीतना नामुमक़िन है।" ये बातें कहते उस जवान ने भालू वाली झाड़ी की ओर इशारा किया। जल-राक्षस का बेटा उस झाड़ी में गया। भालू से लड़कर घायल हो, जान बचाकर अपने बाप के पास दौड़ गया।

अपने बेटे को हारकर लौटे देख जल-राक्षस ने सोचा कि उस जवान के साथ

"कोई बात नहीं, इस बार तुम दौड़ने की होड़ लगा कर उसे हराओ।" जल राक्षस ने अपने बेटे को हिम्मत बँधाते हुये आज्ञा दी।

"अबे, सुनो, क्या तुम मेरे बराबर दौड़ सकते हो?" छोटे राक्षस ने जवान से पूछा।

"क्या तुम मुझे बेकार समझते हो? चाहे तो तुम मेरे छोटे भाई के साथ होड़ लगाओ।" यह कहते जवान ने इस बार पिंजड़े में से खरगोश को बाहर निकाला। वह उछल-कूद करते कुछ ही क्षणों में भाग कर गायब हो गया।

समझौता करना उचित है। यह सोच कर उसने अपने लड़के से कहा–"उस जवान के साथ समझौता करना ठीक होगा, बेटा! जाकर उस से पूछो कि तालाब में जाल न डालने के बदले में वह कितने रुपये लेता है?"

जल-राक्षस के बेटे को इस बार अपने सामने खड़े देख युवक ने पूछा–"क्यों बे, क्या तुम्हारी खुजली अभी दूर न हुई?"

"दोस्त! मैं इस बार तुमसे होड़ लगाने नहीं आया हूँ। यह बताओ कि तुम हमारे तालाब को छोड़ कर जाने के लिए कितने रुपये लेते हो?" जल-राक्षस के बेटे ने पूछा। जवान ने सोचते हुये अपनी टोपी निकाली और कहा–"इस टोपी भर में सोने के सिक्के डाल दो। मैं अपने रास्ते आप चला जाऊँगा।"

जल-राक्षस जवान की शर्त सुनकर बहुत ही ख़ुश हुआ और बोला–"मैंने सोचा था कि वह बहुत बड़ी रक़म मांगेगा। बस, टोपी भर सिक्के चाहता है। ये ले जाओ।" यह कहकर जल-राक्षस ने अपने बेटे के हाथ सोने के सिक्के भेजें।

इस बीच में जवान ने अपनी टोपी में छेद बना डाला। ज़मीन में एक गड्ढा खोदकर उस पर टोपी रख दी। जलराक्षस

के बेटे ने आकर एक बर्तन भर सिक्के डाल दिये, फिर भी टोपी नहीं भरी।

"अबे, अभी टोपी नहीं भरी और ले आओ।" जवान ने कहा।

जल-राक्षस के लड़के ने जाकर और सिक्के माँगे। "अरे, बर्तन भर सिक्के डाल दिये तो टोपी नहीं भरी? यह भी कैसी टोपी है? क्या करें, बड़ी मुसीबत आ गयी! एक बर्तन भर सिक्के और ले जाओ।" जल-राक्षस ने अपने बेटे से कहा।

दूसरे बर्तन भर सिक्के डालने पर भी टोपी नहीं भरी। तीसरी बार एक और बर्तन भर सिक्के डालने पर टोपी के नीचे का गड्ढा और टोपी भी भर गयी।

"अच्छी बात है! अब मैं यहाँ से चला जाता हूँ। तुम लोग यहाँ बेफ़िक्र रहो।" यह कहकर उस जवान ने जल-राक्षस के बेटे को वहाँ से भेज दिया। सारे सिक्के लेकर छोटा भाई अपने गाँव लौटा। उसने एक बड़ा मकान खरीदा। नौकर रखे और ज़मीन्दार की तरह ज़िंदगी बिताने लगा।

उस जवान के बड़े भाईयों ने पूछा—"तुमको ये सब रुपये कहाँ से मिले?"

"तुम दोनों ने मेरे हिस्से में जो रस्सा दिया, उससे मैंने जाल बनाये। उन जालों से जानवर पकड़कर रुपये कमाये।" छोटे भाई ने कहा।

"देखो भाई, हमें यह रस्सा उधार में दो। हम भी रुपये कमाकर उसे लौटायेंगे।" बड़े भाइयों ने पूछा।

"यह कौन बड़ी बात है? ले जाइये।" छोटे ने अपने भाइयों को रस्सा दे दिया।

मगर वह रस्सा फिर छोटे के हाथ में नहीं आया। उसके भाई उस रस्से को लेकर कहाँ गये और क्या हुये, किसी को पता न चला।

बेकार का यश

कलिंग देश का राजा दानकर्ण कहलाता था। वह रोज हज़ारों गरीब लोगों को अन्नदान करता और ब्राह्मणों को स्वर्णदान भी देता! इसलिए सभी देशों में महादाता के रूप में उसका यश फैल गया।

कलिंग राजा के एक पुत्री थी। जब वह शादी के योग्य हुई तब योग्य वर की खोज होने लगी। आख़िर मालूम हुआ कि कांभोज देश का राजकुमार सब तरह से कलिंग राजकुमारी के योग्य वर है।

कलिंग राजा ने कांभोज राजा के पास दूत भेजा। दूतों ने जाकर कांभोज राजा से कहा–"महाराज, हमारे राजा की ख्याति सर्व विदित है। वे हजारों गरीबों और ब्राह्मणों को प्रति दिन दान दिया करते हैं। हमारी राजकुमारी के साथ आपके पुत्र का विवाह हो जायें तो बड़ा अच्छा होगा।"

"मुझे लगता है कि तुम्हारे देश में गरीब ही गरीब भरे हैं। ऐसे गरीब देश के साथ हम संबंध रखना नहीं चाहते।" कांभोज राजा ने जवाब दिया।

43

लापता लड़का

एक नगर में एक ज़मीन्दार था। उसके एक लड़का हुआ। उस लड़के के पैदा होने के पहले ही ज़मीन्दार ने एक सपना देखा। सपने में उसे बताया गया कि उसके जो लड़का होने वाला है, उसके दस साल की उम्र होने तक ज़मीन से उसके शरीर का स्पर्श नहीं होना चाहिये। अगर उसका शरीर ज़मीन से छू जायगा तो खतरा पैदा होगा।

ज़मीन्दार ऐसी बातों पर पूरा विश्वास रखता था। इसलिए उसके लड़का होते ही उसने नौकरों को आज्ञा दी कि उस बच्चे के दस साल पूरे होने तक उसका शरीर ज़मीन को न छूवे। इस वज़ह से बच्चे के घुटनों के बल रेंगने की उम्र तक कोई न कोई उसे हाथों में उठाये रहता, या नहीं तो ठेले में बिठाकर घुमाते। इस तरह बड़ी सावधानी रखी गयी।

दिन बीतने लगे। लड़का हाथों में ही पलने लगा। लेकिन दिन सदा एक से नहीं होते। एक दिन भूल हो ही गयी। आखिर लड़के की निगरानी रखने के लिए एक दासी तैनात की गयी थी। एक दिन वह लड़के को उठाये खिला रही थी, अचानक आँगन में कोई कोलाहल हुआ। दासी ने लड़के को झट ज़मीन पर उतारा और वह आँगन की ओर दौड़ पड़ी। उसे जब अपनी भूल मालूम हुई, तब वह घबराये हुये वापस लौटी। मगर लड़का गायब था।

दासी ने ज़मीन्दार के पास जाकर अपनी गलती बता दी और कहा कि लड़का गायब है। सारे महल में लड़के की खोज हुई, अहाते में भी ढूंढ़ा गया, लेकिन लड़के का कहीं पता न लगा।

कुछ साल और बीत गये।

अशोक जैन

ज़मीन्दार के महल की बैठक में रात के समय कुछ विचित्र ध्वनियाँ होने लगीं। पहरेदारों ने ये बातें ज़मीन्दार से बता दीं। आखिर यह साबित हुआ कि आधी रात के वक़्त बैठक में किसी के चलने और कराहने की आवाज़ होती है। इसलिए रात के वक़्त बैठक में जाने से सब कोई डरने लगे।

ज़मीन्दार को संदेह हुआ कि इस आवाज़ के साथ अपने लापता लड़के का शायद कोई संबंध हो। इसलिए ज़मीन्दार ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो आदमी रात-भर बैठक में बिताकर वहाँ का सच्चा हाल बता देगा, उसे सौ सोने के सिक्के दिये जायेंगे। मगर पहले कोई इसके लिए तैयार न हुआ। इसके बाद कुछ लोग धन के लोभ में पड़कर रात-भर बैठक में बिताने को राजी हो गये। लेकिन आधी रात होने के पहले ही वे लोग डर के मारे पागल हो कर लौट आये।

यह सोच कर ज़मीन्दार निराश हो गया कि उसके लापता लड़के को देखने का भाग्य उसकी क़िस्मत में बदा नहीं है।

ज़मीन्दार के क़िले के पास एक गरीब औरत का घर था। उसके दो लड़कियाँ थीं। बड़ी लड़की ने एक दिन ज़मीन्दार के पास आकर कहा कि सौ सिक्के दिये जायें तो वह रात भर बैठक में बितायेगी।

"बेटी, सोच-समझ कर निर्णय करो, इस प्रयत्न में शायद तुम्हें कोई ख़तरा पैदा हो जायँ।" ज़मीन्दार ने कहा।

"सोचने की ज़रूरत नहीं है। हम गरीब हैं। हमें किसी बात का डर नहीं होता।" बड़ी लड़की ने जवाब दिया।

"तब तो तुम आज की रात बैठक में बिता दो और सवेरे मुझे बैठक का हाल बता दो। तब मैं तुमको सिक्के दूंगा।" ज़मीन्दार ने समझाया।

लेकिन पहले उसे कोई दिखायी न दिया। थोड़ी देर बाद कोई युवक उसी की ओर बढ़ते दिखायी दिया।

युवक ने उस युवती के निकट पहुँचकर पूछा–"लगता है, तुम रसोई बना रही हो? यह किस के लिए बना रही हो?"

"किस के लिए क्या, अपने लिए ही।" युवती ने तिरस्कार पूर्वक जवाब दिया।

"यह थाली और कटोरियाँ किस के भोजन करने के लिए हैं?" युवक ने फिर पूछा। उसके चेहरे पर संकोच झलक रहा था।

गरीब औरत की बड़ी लड़की ने उस रात के लिए आवश्यक रसोई की सामग्री, बिस्तर वगैरह ज़मीन्दार से माँगकर ले लिया। और शाम के होते ही बैठक में जा पहुँची। उसके मन में किसी बात का बिलकुल डर न था।

सब सामान ठीक-ठाक कर रसोई शुरू करने में ही काफ़ी समय गुज़र गया। रसोई पूरी भी न हो पायी थी कि आधी रात हो गयी। उसी वक़्त उसे किसी के क़दमों की आहट हुई और किसी की कराहट भी उसे सुनाई दी। भय के मारे लड़की ने चारों ओर नजर दौड़ाई,

"और किस के लिए! मेरे लिए ही।" युवती ने उत्तर दिया।

"तो यह चारपाई और बिस्तर किस के सोने के लिए हैं?" युवक ने फिर पूछा।

"मेरे सोने के लिए?" युवती ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

युवक ने दीर्घ साँस ली और वह तुरंत गायब हो गया।

सवेरा होने पर उस युवती ने ज़मीन्दार से वे सारी बातें बतायीं और सौ सोने के सिक्के लेकर घर चल दी।

मगर इस से ज़मीन्दार को संतोष न हुआ। वह सोचने लगा कि वह युवक उसका

पुत्र ही हो सकता है, मगर उसने उसे नहीं देखा और न वह उसे प्राप्त हुआ! इसलिए रात में बैठक में दिखाई देनेवाले उस युवक को जो उसे दिखायगा, उसे और बड़ा पुरस्कार देने को ज़मीन्दार तैयार हो गया।

यह खबर मिलने पर गरीब औरत ने अपनी छोटी पुत्री को ज़मीन्दार के पास भेजा। उसने ज़मीन्दार से मिलकर बताया कि वह ज़मीन्दार की इच्छा की पूर्ति करने का प्रयत्न करेगी। इस पर ज़मीन्दार ने मान लिया।

उस रात को वह युवती भी अपनी बड़ी बहन की तरह रसोई की सामग्री, खाट और बिस्तर माँग लायी। रसोई बनाने लगी। जब रसोई समाप्त होने को थी, तब खाने के लिए थाली और कटोरियाँ सजाने लग गयी।

इतने में किसीके चलने की आहट सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा तो उसके पास कोई युवक खड़ा था। "रसोई किस के लिए बना रही हो?" युवक ने पूछा।

उस युवक का कंठ मधुर ज़रूर था। मगर उसके चेहरे पर दीनता टपक रही थी।

"मैं अपने लिए ही बना रही हूँ। चाहो तो तुम्हारे लिए काम दे सकती है।"

यह बात सुनने पर युवक का चेहरा खिल उठा—"वह थाली और वे कटोरियाँ किस के लिए?" युवक ने फिर पूछा।

"मेरे लिए हैं, पर चाहो तो तुम भी भोजन कर सकते हो?" युवती ने जवाब दिया।

"वह खाट किस के सोने के लिए है?" युवक ने फिर पूछा।

"मेरे लिए ही, मगर चाहो तो तुम भी लेट जाओ।" युवती ने कहा।
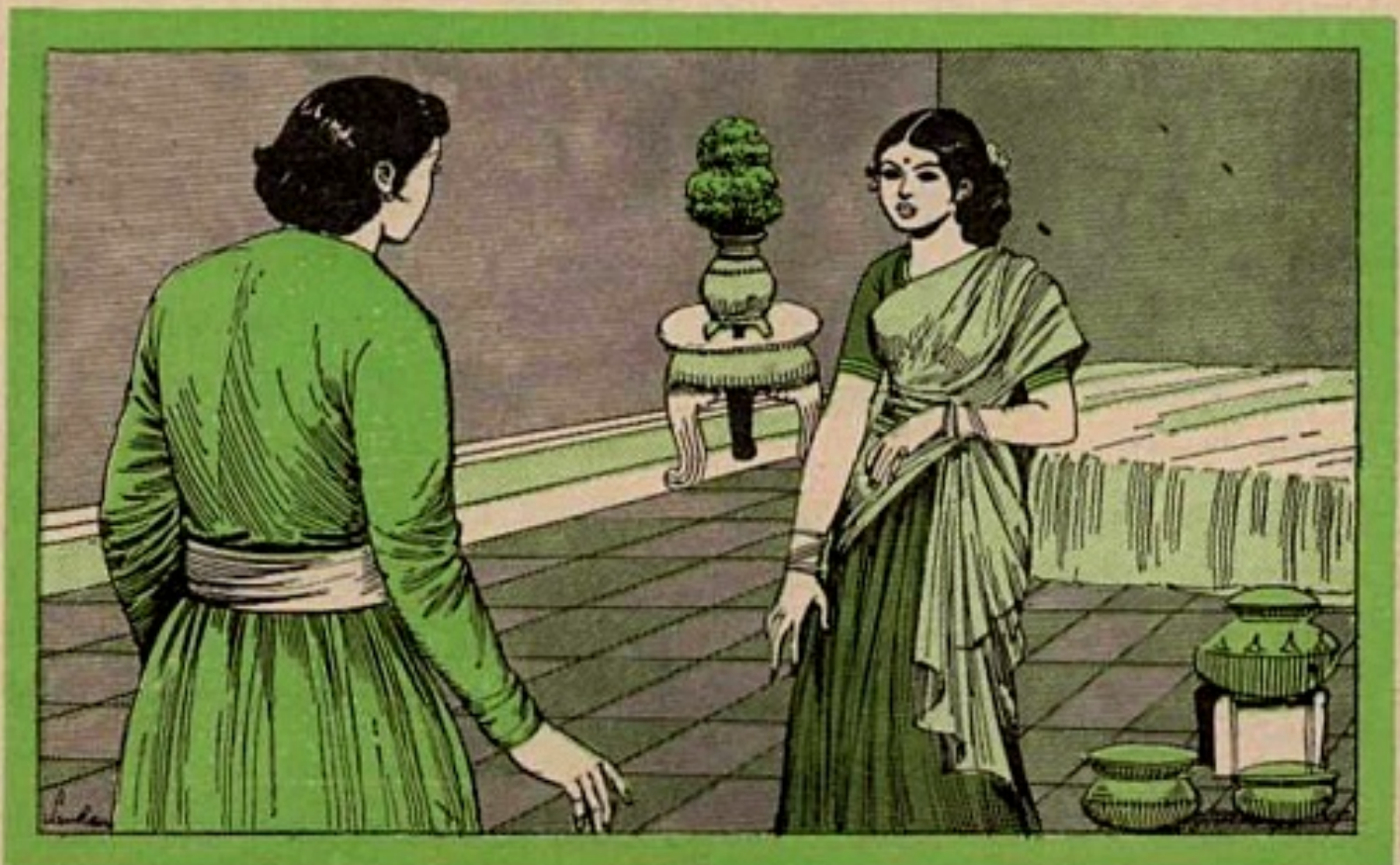
इस बार युवक के चेहरे पर मुस्कुराहट खिल गयी। उसने कहा—"मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ! तुम्हारा निमंत्रण बड़ी खुशी से स्वीकार करूँगा।"

तब तक रसोई बन चुकी थी। वह युवती युवक को खाना परोसने लगी। तब युवक बोला—"पल भर ठहर जाओ। मेरे प्रति उपकार करनेवालों को धन्यवाद देकर आ जाता हूँ।" ये शब्द कहते युवक बैठक के मध्य भाग की ओर चला।

उस युवती के देखते देखते फ़र्श पर एक गोल सुरंग हुआ और उसमें से फूलों की खुशबू से भरी हवा बैठक में फैल गयी।

युवती यह सोचकर झट उस बिल के पास पहुँची कि न मालूम वह युवक क्या करेगा। उसका विचार यह भी था कि उस युवक पर जो बीतेगा, वह पूरा समाचार उसे ज़मीन्दार को देना है, यह सोचकर वह भी उस बिल में उतर पड़ी।

बिल के भीतर उस युवती को एक नयी दुनियाँ दिखायी दी। वहाँ पर एक सुंदर झरना बह रहा था। उसका पानी गलकर बहने वाले सोना जैसा था। उस मैदान में हरी घास कालीन की तरह बिछी हुई थी। जहाँ तहाँ सोने के शिखरों वाले पहाड़ और खिले हुये फूलोंवाले पौधे थे। युवक

मैदान से होकर एक वन में जा पहुँचा। उस वन में सोने के पेड़ थे। पेड़ों पर बैठे हुये पक्षी उस युवक को देखते ही उसके चारों ओर फैल गये। कुछ पक्षी उसके कंधे पर, कुछ सर और हाथों पर बैठ गये। ऐसा लगता था कि वे सारे पक्षी उसके परिचित हैं। युवक उनका परामर्श करके आगे बढ़ा। वह युवती भी उसके पीछे-पीछे चली।

एक मैदान और पार करके वे दोनों चाँदी के पेड़ोंवाले वन में पहुँचे। वहाँ पर तरह तरह के जानवरों ने उस युवक को घेर लिया। युवक ने बड़े प्यार से उनका परामर्श किया। इस तरह वह अपने सभी साथियों से विदा लेकर वापस लौटा। उसके साथ युवती भी लौट आयी। वे दोनों जब बैठक में आ पहुँचे, तब वह बिल इस तरह भर गया कि उसका पता तक न चला कि वह बिल कहाँ पर है।

"अब मुझे खाना खिलाओगी?" युवक ने पूछा।

दोनों ने मिलकर खाना खाया। युवक सोने के लिए खाट पर आ लेटा। युवती थालियाँ व बर्तन धोकर लौटी तो युवक गहरी नींद सो रहा था। वह युवती भी ज़मीन पर लेट कर सो गयी।

दूसरे दिन सूर्योदय हुआ। तब भी वे दोनों सो रहे थे। ज़मीन्दार ने डरते-डरते बैठक में क़दम रखा तो देखता क्या है; एक युवक खाट पर सो रहा है। उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। युवक को देखते ही ज़मीन्दार ने पहचान लिया कि वह उसी का लड़का है।

उस दिन क़िले में एक बहुत बड़ा उत्सव हुआ। युवक ने बताया कि जो युवती उसे फिर से मानवों की दुनियाँ में ले आयी है, उसी के साथ वह शादी करेगा। ज़मीन्दार ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उन दोनों का विवाह किया।

सूदख़ोर

एक गाँव में एक सूदखोर था। वह बड़ा निर्दयी था। वह कसकर सूद लेता और मीयाद के अन्दर अगर कोई उधार न चुकाता तो उसकी जायदाद पर अधिकार कर लेता। एक दिन जयकांत नामक एक आदमी ने सूदखोर के पास आकर पचास रुपये कर्ज माँगा। सूदखोर ने जयकांत से बताया—"तुम सौ रुपये का नोट लिखकर दो और दो महीनों के अन्दर चुकाने की शर्त रखो तो मैं तुम्हें पचास रुपये कर्ज में दूँगा। समय के अन्दर कर्ज न चुकाओगे तो तुम्हारी जायदाद का नीलाम करूँगा।"

"मेरी जायदाद सिर्फ़ एक तोता और एक घोड़ा है। अगर दो महीनों के अन्दर मैं तुम्हारा कर्ज चुका न सकूँगा तो उनको बेचकर चुका दूँगा।" जयकांत ने जवाब दिया।

मीयाद पूरी हो गयी। जयकांत का घोड़ा तीन सौ रुपये का था। सूदखोर ने कहा कि मैं अपने कर्ज के बदले घोड़ा ले लूँगा। "मैं सिर्फ़ घोड़े को नहीं बेचूँगा। तोते और घोड़े को मिलाकर बेचूँगा। दोनों का दाम चार सौ रुपये दे दो।" जयकांत ने कहा।

"तुम्हारे इस कमबख़्त तोते की मुझे जरूरत नहीं।" सूदखोर ने कहा।

"मैं दोनों को बेचकर घोड़े का दाम तुमको दूँगा। मेरे साथ चलो।" यह कहकर जयकांत सूदखोर को अपने साथ ले गया और चिल्ला उठा—"तोते और घोड़े का दाम चार सौ रुपये हैं।" वहाँ पर भीड़ इकट्ठी हो गयी। एक आदमी ने पूछा—"तोते और घोड़े का अलग-अलग दाम बताओ।" वह आदमी जयकांत का दोस्त ही था।

"घोड़े का दाम चार रुपये और तोते का दाम चार सौ रुपये।" जयकांत ने जवाब दिया। उस आदमी ने घोड़ा लेकर चार रुपये जयकांत के हाथ में रखा। जयकांत ने चार रुपये सूदखोर को देकर कहा—"तुम्हारा कर्ज चुक गया।" यह कहकर वह अपने रास्ते चला गया।
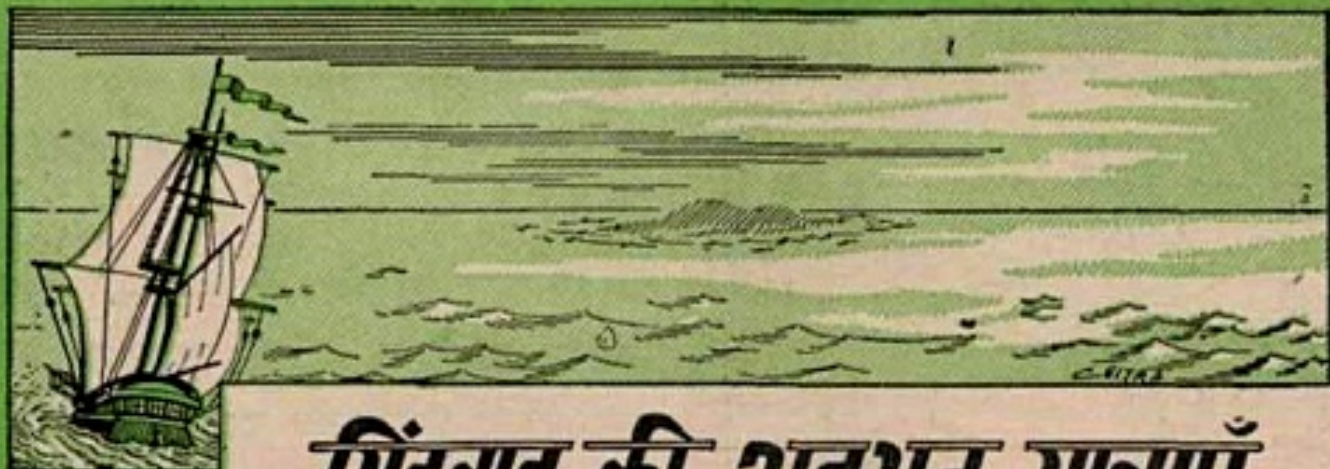
सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

सिंदबाद ने तीन-चार साल विलासपूर्ण जीवन बिताया, तब वह उस ज़िंदगी से ऊब गया। उसके मन में नये देश देखने और नयी बातें जानने की इच्छा पैदा हुई। देशाटन अगर फ़ायदेमंद भी हो तो व्यापार करना जरूरी है। इसलिए उसने हाट में जाकर व्यापार के लिए जरूरी चीज़ें खरीदीं। उन्हें गठरियाँ बंधवाकर बंदरगाह ले गया।

जल्द ही बंदरगाह में एक अच्छे क़िस्म का जहाज़ आ पहुँचा। समुद्री यात्रा के लिए वह बहुत ही उपयोगी जहाज़ था। उसके बड़े सुंदर पाल लगे थे। उसे देखते ही सिंदबाद के दिल में उस जहाज़ में यात्रा करने की इच्छा पैदा हुई। उसके परिचित कई व्यापारी उसी जहाज में यात्रा करनेवाले थे। सिंदबाद ने भी अपना सारा माल उस जहाज़ में चढ़वा दिया। उसने सोचा कि मित्रों के साथ उसकी यात्रा आराम से चलेगी।

जहाज़ ने समुद्री यात्रा बड़ी तेजी से शुरू की। कई टापुओं में उस जहाज ने लंगर डाला। व्यापारियों ने वहाँ के अधिकारियों से परिचय करके अपने माल को वहाँ के व्यापारियों में बेचा और उनके माल को ख़रीदा। इस तरह कई सप्ताहों तक यात्रा चली। उनका व्यापार भी ख़ूब हुआ। आखिर जहाज़ एक नये टापू में जा पहुँचा।

वह टापू निर्जन मालूम हुआ। कहीं भी मानवों का संचार न था। मगर उस टापू में ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे। उन पर तरह-तरह के पक्षी बहुत ही मनोहर ढंग से कलरव कर रहे थे। जहाँ-तहाँ सुंदर झरने बह रहे थे। देखने में वह टापू स्वर्ग जैसा मालूम हो रहा था।
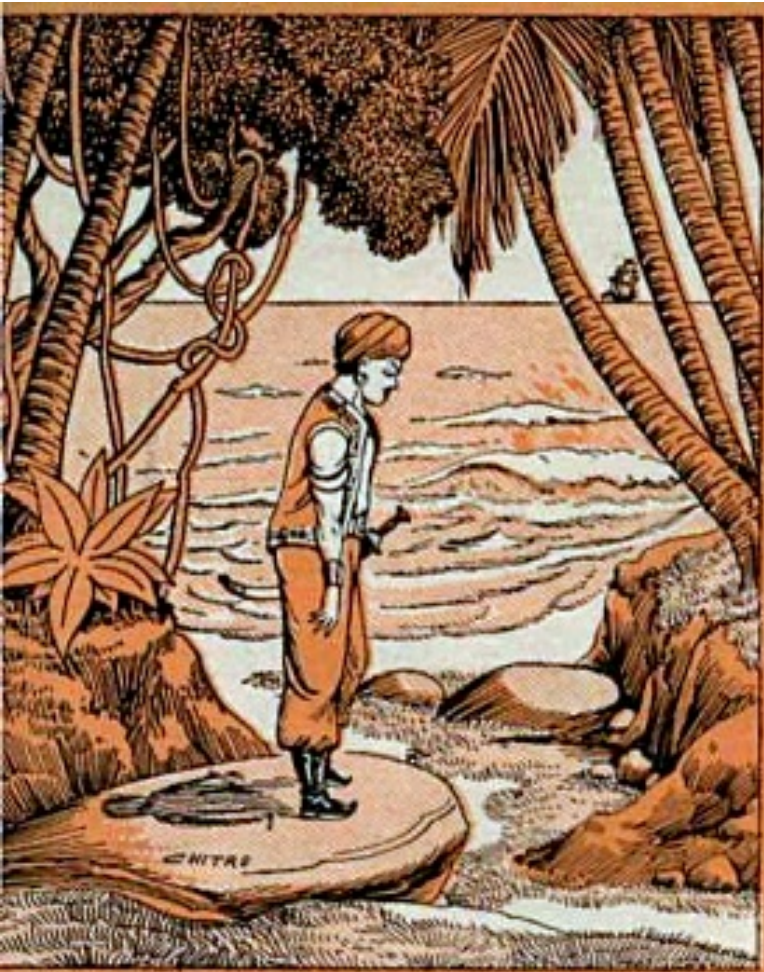
ब्यापारी जहाज़ से उतरकर पेड़ों के बीच सैर करने लगे। सिंदबाद ने खाना खाया। एक झरने के किनारे पेड़ों की छाया में बैठकर हवा खाने लगा। इसके बाद वह हरी घास पर लेटकर थोड़ी देर तक आराम करता रहा; फिर वह गहरी नींद में डूब गया।

जब सिंदबाद की आँख खुली, तो वह देखता क्या है, टापू पर कोई आदमी न था। बंदरगाह में जहाज़ का भी पता न चला। वह बंदरगाह में दौड़कर देखता क्या है, दूर पर जहाज़ के पाल उड़ रहे थे। सिंदबाद की बात भूलकर, बाक़ी लोगों के साथ जहाज़ चल चुका था। सिंदबाद के देखते-देखते जहाज़ आँखों से ओझल हो गया।

सिंदबाद का दिल बैठ गया। उसका सारा माल जहाज़ के साथ चला गया था। वह अकेला एक निर्जन टापू पर रह गया था। उसे अपनी हालत पर बड़ा दुख हुआ। लगा कि उसका दिमाग़ ख़राब होता जा रहा है। उसे इस बात पर संदेह होने लगा कि हर बार क़िस्मत उसका साथ कहाँ तक देगी? हाथ से गिरनेवाली सुराही अगर पहली बार टूट नहीं गयी तो इस बात की क्या गैरंटी है कि वह दूसरी बार भी न टूटेगी। इसी तरह न मालूम इस बार उस की क़िस्मत में क्या लिखा है!

वह एक दम विकल होकर रो पड़ा। अपना सर पीटा। ऐश-आराम की ज़िंदगी बितानेवाले उसके दिमाग में दुनिया देखने और धन कमाने का लोभ ही क्यों पैदा हुआ? पहली यात्रा भी तो सुखपूर्वक नहीं बीती। उस वक़्त भी उसने नाना प्रकार की तक़लीफ़ें झेलीं थीं। मगर अब सोचने से फ़ायदा ही क्या? कौन बता सकता है कि किसकी मौत कैसे होनेवाली है।

इस तरह थोड़ी देर तक अपनी क़िस्मत को कोसकर सिंदबाद ने थोड़ी हिम्मत बटोर ली। तब वह अपने कर्तव्य के बारे में सोचने लगा। वह यह भी सोचने लगा कि वह जिस प्रदेश में है, पहले उसका परिचय प्राप्त करना है। इसलिए वह पेड़ों के बीच से चलते टापू के भीतर पहुँचा। थोड़ी दूर चलने पर उसे डर लगा कि कहीं खूँख्वार जानवरों का सामना हो जाय तो क्या करें! झट वह एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ बैठा और चारों ओर नजर दौड़ायी।

चारों तरफ़ उसे सिर्फ़ पेड़, पक्षी, पहाड़ और टीले ही दिखाई दिये। लेकिन एक दिशा में उसे सफ़ेद इमारत जैसी कोई चीज़ दिखायी दी। वह ऊँचे बुर्ज की तरह मालूम होती थी। वहाँ तक पहुँचने की लालसा सिंदबाद के मन में बढ़ने लगी।

सिंदबाद पेड़ से उतरकर उस दिशा की ओर चलने लगा। किसी खतरे की शंका से धीरे धीरे क़दम बढ़ाते वह उस सफ़ेद इमारत की ओर आगे बढ़ा। वह ऊँचे बुर्ज की तरह थी। इस ख्याल से उसने उस बुर्ज की प्रदक्षिणा की ताकि कहीं उसके भीतर पहुँचने का दर्वाज़ा दिखाई दे। लेकिन कहीं उसे द्वार दिखाई न दिया, उस पर चढ़कर देखना चाहा, मगर वह इतना चिकना था कि उस पर पैर फिसल जाते थे। उसने डग भरते चारों ओर परिक्रमा की। उसका वृत्त एक सौ पचास डग था।

सिंदबाद सोच ही रहा था कि किसी न किसी तरह उस बुर्ज में पहुँचने का रास्ता मालूम हो जाय तो क्या ही अच्छा हो। इतने में सूरज डूब गया और अंधेरा फैलने लगा। वह गरमी का मौसम था। इसलिए बादल भी सूरज को ढँकते न थे।

उसने सर उठाकर सूरज़ की दिशा में देखा तो उसे एक भारी पक्षी दिखाई दिया। उसके पंख बड़े-बड़े मेघों के समान थे। उसे देखते ही सिंदबाद का दिल दहल उठा।

सिंदबाद ने सोचा कि वह भ्रम में पड़ गया है। लेकिन उसे अचानक भेरुंड पक्षियों की बात याद आयी। यात्री कहा करते थे कि भेरुंड पक्षी हाथियों को भी बड़ी आसानी से उठा ले जा सकते हैं और वे पक्षी समुद्र के बीच किसी टापू में हैं। सिंदबाद ने अपने मन में सोचा कि यह भी भेरुंड पक्षी होगा। उसने बुर्ज जैसी जो सफ़ेद वस्तु देखी, वह शायद उसी पक्षी का अण्डा होगा और वह बालू में धँस गया होगा।

सिंदबाद की यह कल्पना सच निकली। क्यों कि वह पक्षी सीधे आकर उस अण्डे पर बैठ गया और अपने परों से अण्डे को ढँककर सो गया।

जिस वक़्त पक्षी जमीन पर उतर रहा था, तब सिंदबाद औंधे मुँह बालू पर लेट गया। उसका पैर पेड़ के तने के बराबर था। उसने उठकर अपनी पगड़ी उतारी, उसे ऐंठकर एक रस्सा बनाया जिससे अपने को पक्षी के पैर से बांध लिया। उसका यह विश्वास था कि कभी न कभी वह पक्षी ज़रूर उड़ जायगा और उसके साथ वह भी उस निर्जन टापू से निकलकर मानव समाज के बीच पहुँच सकता है।

सिंदबाद जब अपने को पक्षी के पैर से बांध रहा था, तब पक्षी को इसका भान तक न हुआ। सिंदबाद यह सोचकर रात भर जागता रहा कि कहीं वह पक्षी रात में ही उड़ न जाय। लेकिन सवेरा होने पर ही वह पक्षी एक बार जोर से कूक उठा, तब उड़ा। बड़ी देर तक वह भेरुंड पक्षी उड़ता रहा और आखिर वह एक पत्थर पर उतर पड़ा।

उस पक्षी के फिर से उड़ने के पहले ही सिंदबाद अपने बंधन खोलकर बाहर आया।

जब वह पक्षी उड़ा, तब सिंदबाद ने देखा कि पक्षी के पैरों के बीच एक बहुत ही मोटा और काला साँप लटक रहा था। उसे देख कर सिंदबाद ने पहले पत्थर समझा था।

सिंदबाद ने चारों तरफ़ नज़र डाली तो उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। वह जहाँ उतरा था, वह एक घाटी थी। उसके चारों तरफ़ ऊँचे पहाड़ थे। वे पहाड़ भी घाटी की ओर सीधे खड़े थे। उन पर चढ़ना नामुमकिन था। उस घाटी में पानी का नाम तक न था। वहाँ पर घास-पूस नहीं उगती। भूख-प्यास से मरना निश्चित है। इस तरह सिंदबाद एक खतरे से बचकर उससे भी भयंकर खतरे में फँस गया था।

सिंदबाद ने हिम्मत करके घाटी में घूमना शुरू किया। वहाँ के पत्थरों में रत्नों को देख उसे आश्चर्य हुआ। कहीं कहीं पत्थरों से छूटकर रत्नों के ढेर लगे थे। मगर उन रत्नों के ढेरों को देख वह प्रसन्न भी हो नहीं पाया। क्यों कि उन पत्थरों के बीच ताड़ के बराबर साँप बड़ी
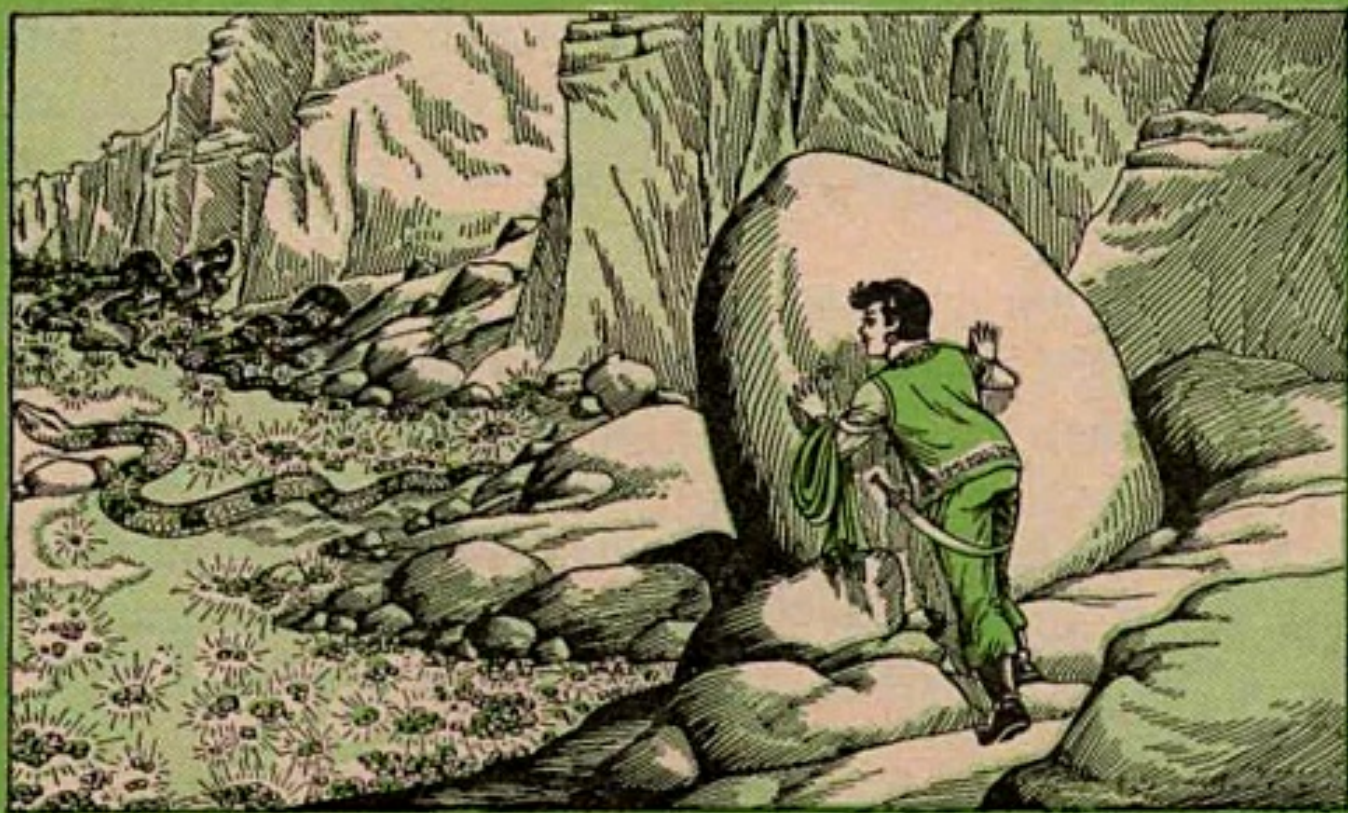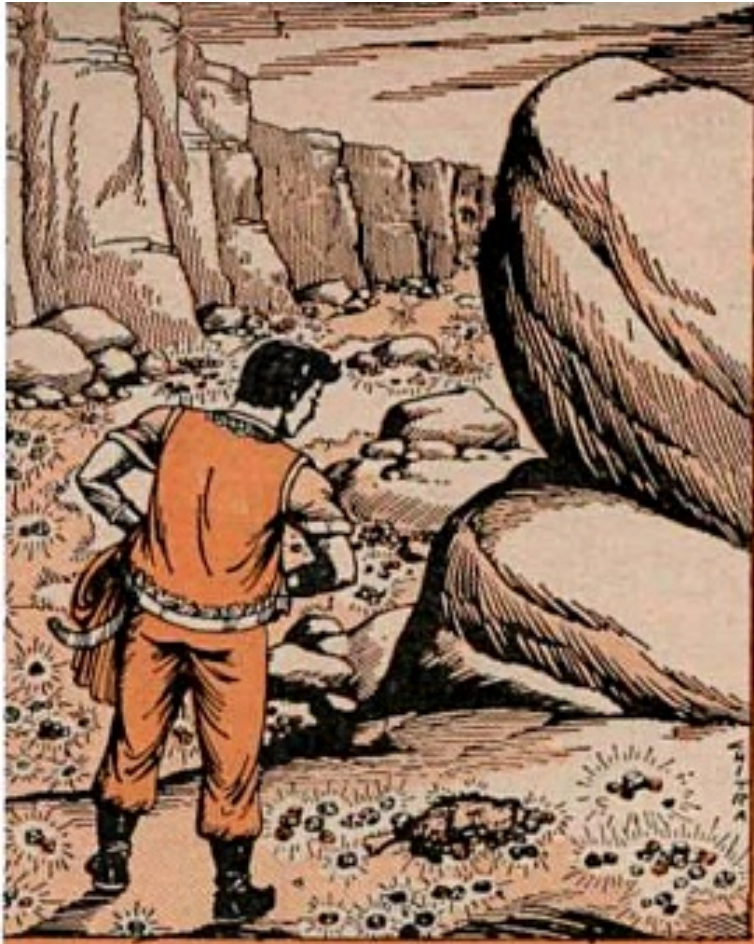
बात मालूम होते ही वह बेहोश हो गया। होश में आकर जब वह उस गेंडुरी से बाहर निकला तब तक रात बीत चुकी थी।

भूख-प्यास और घबराहट की वजह से वह थककर चूर हो गया था। वह जैसे-तैसे खड़े हो इस बात पर खुश होने लगा कि साँप ने उसे निगल नहीं डाला। इतने में उसके सामने कहीं से माँस का एक बड़ा टुकड़ा आ गिरा। सर उठाकर उसने ऊपर देखा, मगर उसे कुछ दिखाई न पड़ा। उसे कोई बात याद आ गयी।

रत्नों की घाटी से रत्न इकट्ठा करनेवाले लोग भेड़ों के मांस-खण्डों को घाटी में फेंक देते हैं। कभी कभी रत्न उन मांस-खण्डों में चिपक जाते हैं। इसके बाद भेरुंड पक्षी उन मांस-खण्डों को उड़ा ले जाकर पहाड़ों पर स्थित अपने निवासों में पहुँचा देते हैं। रत्नों का संग्रह करनेवाले लोग बड़ा कोलाहल करके उन पक्षियों को वहाँ से भगा देते हैं, तब उन रत्नों को ले जाते हैं।

सिंदबाद रत्नों की घाटी से बचने का उपाय सोचने लगा। उसने बड़े-बड़े रत्नों को चुनकर अपनी पोशाकों में छिपा लिया। इसके बाद एक मांस-खण्ड को पगड़ी से

स्वेच्छा से घूम रहे थे। दिन भर वे साँप घूमकर रात के वक़्त भेरुण्ड पक्षियों से बचने के लिए अपने बिलों में जा रहे थे। सिंदबाद अपनी भूख-प्यास को भूलकर दिन-भर उन साँपों से बचने के प्रयत्न में लगा रहा।

अंधेरा फैलने लगा। तब उसे एक पहाड़ी बिल दिखायी दिया। वह बिल उसके घुसने लायक़ था। उसने उस बिल में प्रवेश करके एक बड़ी चट्टान से उस बिल को ढँक दिया। इतने में उसे मालूम हुआ कि वह जिस बिल में घुस आया था, वह साँप की गेंडुरी थी। यह

अपने पेट पर बांध दिया। फिर औंधे मुँह लेट गया। थोड़ी देर बाद एक भेरुंड पक्षी आया और मांस-खण्ड के साथ उसे भी उड़ा ले जाकर अपने निवास पर उतार दिया। तुरंत वह पक्षी मांस और सिंदबाद को भी अपनी चोंच से चीरकर अपने बच्चों को खिलाने लगा।

भाग्यवश इतने में तालियों की भयंकर आवाज़ हुई। आवाज़ सुनकर पक्षी उड़ गया। सिंदबाद का शरीर खून से लतपथ था। वह बड़ी मुश्किल से उठ खड़ा हुआ। उस वक़्त एक व्यापारी वहाँ तक दौड़ा दौड़ा आया। वह सिंदबाद को देख चकित रह गया। इसके बाद उसने माँस-खण्ड की जाँच की। उस में रत्न नहीं लगे थे। उसने क्रोध में आकर कहा—"यह सब दगा है। धोखा हे। क्या तुम मेरी संपत्ति हड़पने के लिए आये हो?"

सिंदबाद ने बड़ी नम्रता के साथ उत्तर दिया—"इस में धोखा या फ़रेब नहीं है। मैं घाटी से जो रत्न लाया हूँ, उनमें से थोड़े तुमको भी दे देता हूँ।" इसके बाद सिंदबाद ने उसे थोड़े रत्न दे दिये। उनको देख वह व्यापारी आश्चर्य में पड़ गया। वह सिंदबाद की तारीफ़ करते हुये बोला—"ऐसा रत्न एक भी मिल जाय तोक्या

कहना! मैंने बड़े से बड़े रत्नों के व्यापारी के पास भी इतने बड़े रत्न नहीं देखे। राजाओं के पास भी ऐसे रत्न पाये नहीं जाते।"

इतने में कुछ और व्यापारी भी वहाँ आ पहुँचे। सिंदबाद ने अपनी सारी कहानी उन्हें सुनायी। उन्हें यह बात बहुत ही आश्चर्यजनक मालूम हुई कि एक मानव रत्नों की घाटी में जाकर प्राणों के साथ लौट आया है। उन सबने सिंदबाद का अभिनंदन किया।

सिंदबाद व्यापारियों के साथ उनके डेरे में गया। अपनी भूख-प्यास मिटाकर रात-दिन सो गया। दूसरे दिन सवेरे सब रवाना हो समुद्र के किनारे जा पहुँचे।

वहाँ से जहाज पर यात्रा करते हुये वे लोग कर्पूरद्वीप में पहुँचे। वहाँ पर कपूर के पेड़ों की छाया में गरमी के दिनों में भी ठण्डक होती है। उन पेड़ों के छिलके निकालकर बर्तनों में उनका रस इकट्ठा करके उस से लोग आरती-कपूर तैयार करते हैं।

उस टापू में सिंदबाद ने एक राक्षसी गैंडे को देखा। वह शाकाहारी था, मगर बड़ा भयंकर था। उसकी चोंच पर जो सींग हैं, उन से वह एक हाथी को भी आसानी से ऊपर उठा सकता है।

सिंदबाद ने कर्पूर द्वीप में कुछ दिन आराम से बिताये। वहाँ पर अपने थोड़े रत्न बेचे कर सोना-चाँदी खरीदा। वहाँ से निकलकर कई टापू, देश और नगरों को देखते आखिर अपने शहर बगदाद में जा पहुँचा। वहाँ पर उसका जीवन बड़े वैभव के साथ कटने लगा। दूर दूर से लोग उसकी यात्राओं के अनुभव सुनने के लिए आते और आश्चर्य चकित हो जाते।

इस तरह सिंदबाद की दूसरी अद्‌भुत यात्रा भी समाप्त हुई।

पांडव अपनी माता के साथ वारणावत नगर जाने के लिए तैयार हो गये। उनके लिए घोड़े जुते रथ तैयार थे। तब पांडवों ने भीष्म, धृतराष्ट्र, विदुर, द्रोण, कृपाचार्य, बाह्लिक, सोमदत्त आदि अन्य बुजुर्गों को प्रणाम किया। उनके आशीर्वाद पाकर दीन वदनों से रवाना हुए।

उस वक़्त कुछ साहसी ब्राह्मण पांडवों के साथ चलते राजा की परवाह किये बिना बोले—"ओह, यह अंधा राजा कैसे पापी है! बेचारे पांडवों ने किसका क्या बिगाड़ा था? उनके पिता ने जिस राज्य पर शासन किया, वह क्या उनका राज्य नहीं है? युधिष्ठिर भी कैसे राजधानी को छोड़ जाने के लिए सहमत हो गये? ऐसे पाप से भरे राज्य में हमें भी क्यों रहना है? युधिष्ठिर जहाँ जायेंगे, हम लोग भी वहीं चलेंगे।" ब्राह्मण आपस में इस प्रकार वार्तालाप करने लगे।

युधिष्ठिर ने उनकी बातें सुनकर समझाया—"महाशय, धृतराष्ट्र हमारे प्रधान हैं। वे हमें जहाँ जाने को कहेंगे, हम वहीं जायेंगे। आप लोग हमारे हितैषी हैं। इसलिए हमको आशीर्वाद देकर आप लोग अपने घर लौट जाइये।" इस तरह उन्हें समझाकर घर भेज दिया।

विदा देनेवाले जब लौट चले तब विदुर युधिष्ठिर के साथ थोड़ी दूर और चला। उन्हें समझाया—"तुम लोगों के लिए वहाँ

१०. लाख से निर्मित भवन का दहन
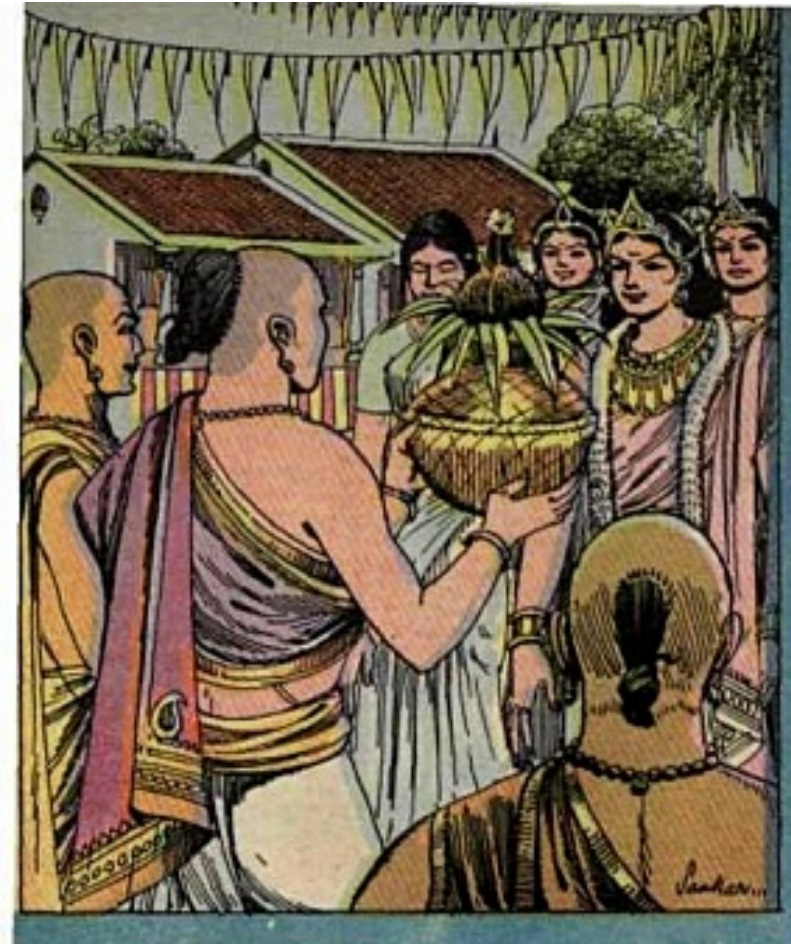
पर लाख से बनाया गया महल तैयार है। दुश्मन का एक व्यक्ति उस घर में तुम लोगों के साथ रहनेवाला है। लाख के घर को वह जलाने के प्रयत्न में है। इसलिए तुम लोग सावधान रहो। तुमको अपनी जान बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन तुममें से एक आदमी लाख के घर से जंगल तक एक सुरंग खोदकर रखेगा। जब तुम लोग अपनी जान बचाकर जंगल में पहुँच जाओगे तब नक्षत्रों के सहारे दिशा का पता लगाकर कहीं चले जाओ।" ये बातें गुप्त रूप से समझाकर विदुर भी लौट गया।

इसके बाद कुंतीदेवी ने युधिष्ठिर से पूछा-"बेटा, विदुर ने तुमको गुप्त रूप से क्या बताया? क्या मैं भी सुन सकती हूँ?" इस पर युधिष्ठिर ने अपनी माता तथा भाइयों से कहा-"उन्होंने यही बताया है कि आग वगैरह का वहाँ पर भय बना रहेगा। तुम लोग बड़ी होशियारी से बच जाओ! यह भी सचेत किया कि बड़ी कुशलता के साथ जीवन-यापन करते हुए अपने राज्य को प्राप्त करो।"

पांडव कुंतीदेवी के साथ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र के काल में वारणावत नगर में पहुँचे। उनके आगमन का समाचार पहले ही जानकर वंदीजन, ब्राह्मण आदि वाद्यवृंदों के साथ अगवानी करने आये। उनके स्वागत के लिए सारा नगर तोरणों, रंगोलिया तथा फूलों से अलंकृत किया गया था। पांडवों ने नगर में प्रवेश करके वहाँ के ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्रों के घर जाकर उन्हें पुरस्कार बाँटे।

इसके बाद पुरोचन पांडवों के लिए प्रबंध किये घर में उन्हें ले गया। वहाँ पर उनके भोजन का भी इंतज़ाम किया। वहाँ पर वे लोग दस दिन रहें। इसके

बाद पुरोचन ने युधिष्ठिर से एक नये निर्मित महल की बड़ाई करते हुए कहा– "राजन्, आपके लिए नये रूप से बनाये गये इस महल में प्रवेश कीजिये।" युधिष्ठिर ने पहले ही उस महल का रहस्य जान लिया था। फिर भी उस महल के सौंदर्य की प्रशंसा पुरोचन के सामने की और अपनी माता तथा भाइयों के साथ उस भवन में प्रवेश किया।

इसके बाद युधिष्ठिर ने गुप्त रूप से विदुर की कही सारी बातें समझायीं। "भीमसेन, इस भवन की गंध तो देखो। जलाने पर यह पल भर में जल जायगा। हमें इस घर में जलाने के लिए ही यह पुरोचन तैनात किया गया है। इसलिए हमें बहुत ही सतर्क रहना चाहिए।"

इस पर भीमसेन ने कहा–"तब तो हमें इस भवन में रहना ही नहीं चाहिए। पहले जिस महल में ठहरे थे, उसी में चले जायेंगे।"

"नहीं, यह तो बड़ी भूल होगी। अगर हम इस भवन में जल नहीं जायेंगे तो पुरोचन हमें मार डालने का कोई दूसरा प्रयत्न करेगा। इसके लिए हमारे पास एक ही उपाय है कि इस घर के साथ हमारे भी जल जाने का भ्रम पैदा करके यहाँ से भाग जाना ठीक होगा। भागने के लिए हमें जंगल के रास्ते ठीक से मालूम होने चाहिए। इसलिए हम शिकार का बहाना करके रोज जंगल के रास्तों का अन्वेषण करेंगे।" युधिष्ठिर ने भीम को समझाया। इसी प्रकार पांडव दिन भर जंगल में शिकार खेलते समय बिताते और रात भर सतर्क रहने लगे।

इस बीच में हस्तिनापुर में विदुर ने सुरंग खोदने में प्रवीण एक व्यक्ति को बुलाया। उसे सारी बातें समझाकर वारणावत में स्थित पांडवों के पास भेजा।

उस आदमी पर विश्वास करने के लिए ज़रूरी संकेत भी पांडवों के पास भेजा।

उसने पांडवों के पास पहुँचकर कहा– "महाराज, दुर्योधन आदि दुष्ट चतुष्टय ने पुरोचन को इसलिए आपके पास भेजा है कि वह आपको महल के साथ जला डाले। वह आगामी कृष्ण चतुर्दशी के दिन इस लाख के मकान में आग लगानेवाला है। उस रात को आप लोगों को इस भवन से भाग जाने के लिए इस घर में से नगर के बाहर जंगल तक एक सुरंग खोदने विदुर ने मुझे नियुक्त किया है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी है कि आप लोग जंगल से कहीं भाग जावे।"

उस आदमी ने भवन के मध्य भाग से एक सुरंग खोद डाला। उस बिल को बड़ी कुशलता के साथ ढाँपकर पांडवों को दिखाया। पांडवों ने इस तरह पुरोचन के साथ व्यवहार किया कि वे लोग उस लाख के महल के बारे में तथा उसके जलाने के संबंध में भी मानों कुछ जानते न हों। उन्हें संदेह तक न हो।

कृष्ण चतुर्दशी का दिन आ पहुँचा। उस दिन कुंतीदेवी ने ब्राह्मण परिवारों को बढ़िया दावत दी। पुरोचन ने एक जंगली औरत और उसके बच्चों को पांडवों की सेवा के लिए नियुक्त किया था। वे लोग पांडवों के लिए जंगल से फल लाते और हर काम में कुंती देवी की मदद किया करते थे। उस दिन उत्सव था। इसलिए उस औरत के साथ उसके पाँच पुत्र भी ज़्यादा ताड़ी पीकर उस रात को वहीं पर सो गये।

आधी रात के समय भीम जाग उठा। उसने पुरोचन के कमरे के दर्वाज़े पर आग लगायी। अपनी माता और भाइयों को सुरंग के द्वारा जंगल में भेज दिया। तब मकान के चारों तरफ़ आग लगायी। वह भी उस बिल से होकर बाहर निकला।

सुरंग खोदनेवाले को अपने परिवार के कुशल समाचार देकर सब लोग सुरंग के रास्ते जंगल में पहुँच गये।

जंगल के रास्ते में कुंतीदेवी पैदल चल न सकी। भीम ने कुंतीदेवी को अपने कंधों पर बिठाया। अन्य लोगों को भी सहारा देते हुए आगे बढ़ा। इस तरह उस घने अंधकार में जंगल के रास्ते से वे लोग गंगा के किनारे पहुँचे।

वहाँ पर उन्हें गंगा नदी को पार कराने के लिए एक नाव पहले से ही तैयार थी। उस नाव का भी प्रबंध विदुर ने किया था। नाविक की बातों से पांडवों को यक़ीन हो गया कि वह विदुर के द्वारा नियुक्त व्यक्ति है, तब पांडव अपनी माता के साथ नाव पर सवार हुए। गंगा पार करने के बाद पांडवों ने जो सांकेतिक शब्द कहे, उन्हें विदुर तक पहुँचाने के लिए नाविक नाव चलाते हस्तिनापुर की ओर रवाना हुआ।

रात अभी शेष थी। नक्षत्रों के सहारे दिशाओं का परिचय पाकर पांडव दक्षिण की ओर चलने लगे। थोड़ी दूर चलने के बाद भीम को छोड़ बाक़ी लोग एक क़दम भी आगे बढ़ा नहीं सके। रात भर उन्हें नींद नहीं थी। जंगल की यात्रा की थकावट से सब परेशान थे। भीम सबको एक ही साथ उठाकर थोड़ी दूर और चला। तब सबको एक जगह उतारकर बैठ गया।
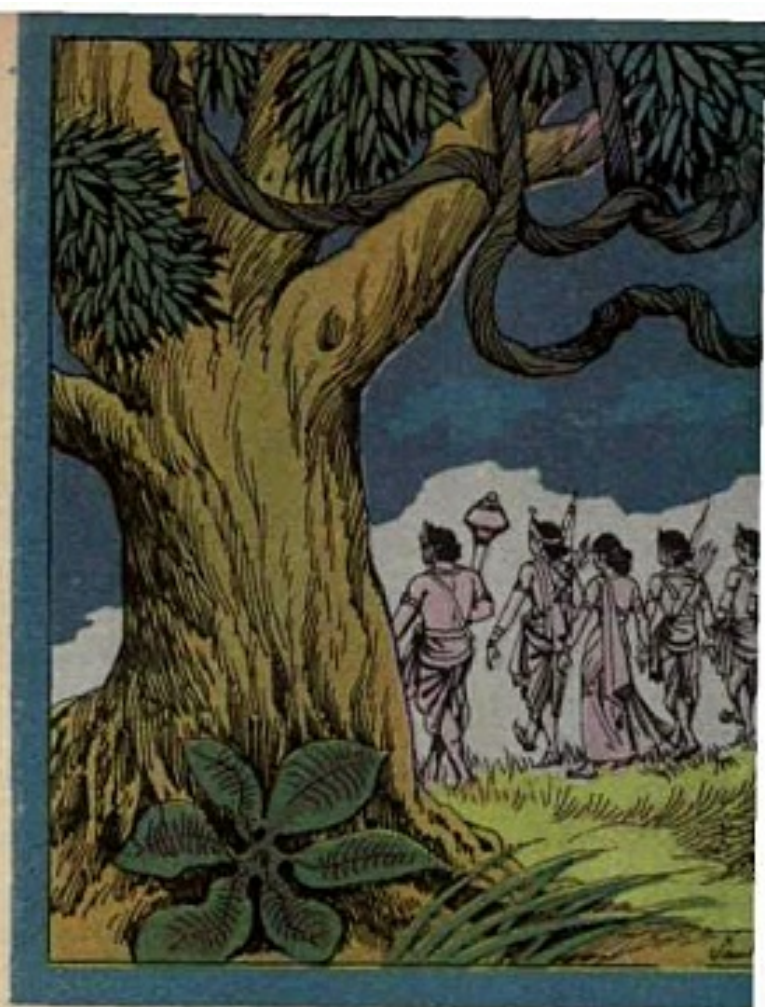
थोड़ी देर बाद कुंतीदेवी ने भीम से कहा–"बेटा, प्यास के मारे जान जा रही है।" तब भीम सबको फिर उठाकर आगे बढ़ा। एक वटवृक्ष के नीचे उन्हें उतारकर बोला–"आप सब यहीं पर लेटे रहिये। मैं पानी लेते आऊँगा।" भीम आगे बढ़ा तो उसे जल-पक्षियों का कलरव सुनाई दिया। उसी दिशा में आगे बढ़ा तो उसे एक सरोवर दिखायी दिया।

भीम ने सरोवर में स्नान किया। पेट भर पानी पिया। तब माता और भाइयों के लिए पानी लेकर वापस लौटा। मगर सभी लोग गाढ़ निद्रा में निमग्न थे।

"ऐसे खतरे की हालत में भी ये लोग गहरी नींद सो रहे हैं। इसका मतलब है कि सब थककर चकनाचूर हो गये हैं।" यह सोचकर भीम का मन उन्हें जगाने में सकुचाने लगा। इसलिए उनके जागने का इंतज़ार करने लगा।

उधर वारणावत नगर में पांडवों के महल जलने का समाचार फैल गया। बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई। मकान अब भी जल रहा था। सुरंग खोदनेवाले ने उन लपटों को बुझाने का अभिनय करते राख के ढेर को इधर-उधर फैलाते बड़ी होशियारी से सुरंग को ढक दिया। पुरोचन, जंगली औरत और उसके पाँच पुत्रों की लाशें जलकर पहचानने की हालत में न थीं। लोगों ने सोचा कि कुंतीदेवी के साथ पांडव तथा पुरोचन उस मकान में जलकर राख हो गये हैं।

यह खबर जल्द ही हस्तिनापुर पहुँच गयी। धृतराष्ट्र को जब मालूम हुआ कि कुंतीदेवी के साथ पांडव जल मरे हैं तो वह-मूछित हो गया। विदुर ने भी सबके साथ रोने का बहाना किया।

पांडव जहाँ पर थककर सो रहे थे, उस जंगल में हिडिंब नामक एक राक्षस रहता था। वह काला और मोटा था। उसकी आँखें पीली थीं। आकृति भयंकर थी। मोटी तोंद, लाल मूँछें! वह मानव भक्षक था। भूख से परेशान था। इसलिए आहार की खोज में सारा जंगल छानते वह एक साल वृक्ष पर चढ़ा। वृक्ष पर बैठकर जंभाइयाँ लेते हुए, खोपड़ी खुजलाते चारों ओर नज़र डाली, तो दूर पर एक बरगद के नीचे लेटे कुछ लोग दिखायी

पड़े। तब उसका उत्साह उमड़ पड़ा। हिडिंब ने अपनी बहन हिडिंबा को बुलाकर कहा–"बहन, बहुत दिनों के बाद मानव का माँस मिला है। तुम जाओ और पेड़ के नीचे जितने लोग हों, उन सब को मारकर ले आओ। पेट भर कर हम नाचेंगे।"

हिडिंबा रवाना होकर पांडवों के पास आयी। उसने सोनेवाले युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कुंती तथा उनका पहरा देनेवाले भीम को भी देखा। हिडिंबा की दृष्टि में भीम बहुत सुंदर लगा। वह भीम पर मोहित हो गयी। उसके भाई का आदेश याद आया। उसने सोचा कि उनको मार डालने की अपेक्षा जीवित रखने से उनके साथ सुखपूर्वक दिन विताये जा सकते हैं।

हिडिंबा ने तुरंत सुंदर रूप धारण किया। लज्जा प्रदर्शित करते, मुस्कुराते वह भीम के पास आयी और पूछा–"महानुभाव, आप कौन हैं? किस देश के रहनेवाले हैं? इस जंगल में क्यों आये हैं? सोनेवाले ये लोग कौन हैं? बहुत ही कोमल लगनेवाली यह बूढ़ी औरत कौन है? क्या आप यह नहीं जानते कि इस जंगल में हिडिंब नामक मेरे भाई रहते हैं, वे बड़े ही ताक़तवर राक्षस हैं। बहुत क्रूर हैं, ये लोग कैसे आराम की नींद सो रहे हैं? आप सब को मारकर आहार के लिए माँस लाने मुझे भाई ने भेजा है। लेकिन आपकी सुंदरता देखकर मैं मोहित हो गयी हूँ। आप लोगों को मारने की मेरी इच्छा नहीं हो रही है। यदि आप मेरी इच्छा की पूर्ति करेंगे तो मैं आप लोगों को मेरे भाई के हमले से बचाकर कामगमन नामक मंत्र द्वारा सुरक्षित प्रांत में पहुँचा दूँगी। वहाँ पर हम दोनों सुखपूर्वक रह सकते हैं। मेरी बात मान जाइये।"
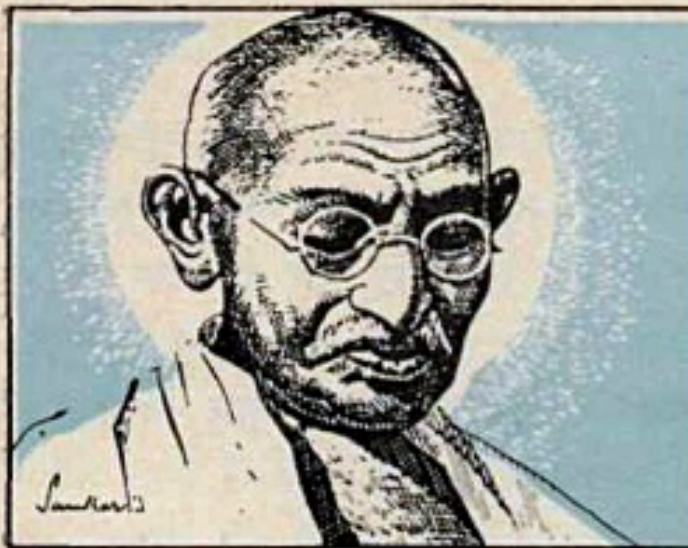
गांधी की कहानी

[१०]

गांधीजी ने फ़रवरी १० को स्मट्स के साथ जो समझौता किया था, उसके अनुसार प्रथम भारतीय के रूप में अपना नाम रजिस्ट्री करने के लिए गांधीजी घर से निकल पड़े। उन्होंने अपने दफ़्तर में प्रवेश करते हुये देखा कि दफ़्तर के बाहर कुछ पठान कोई षड्यंत्र रच रहे हैं। उनमें मीर आलम नामक छे फुट ऊँचा एक भारी आदमी और गांधीजी का एक मुवक्किल भी था। गांधीजी ने मीर आलम का परामर्श किया। वह झिझकते हुये कुछ बोला और उनका पीछा करने लगा। गांधीजी के फान ब्रांडन नामक गली में प्रवेश करते ही उसने पूछा–"आप कहाँ जा रहे हैं?"

गाँधीजी का जवाब देने के पहले ही पठानों ने उन्हें बुरी तरह से पीटा। "हे राम!" कहते गांधीजी बेहोश हो कर नीचे गिर पड़े। वे लोग उस दिन गांधीजी को मार ही डालते, लेकिन गांधीजी के कुछ अनुचरों तथा रास्ते चलने वाले गोरों ने उन्हें बचाया।

खून से लतपथ गांधीजी को लोगों ने पास की एक दूकान में पहुँचा दिया। होश में आते ही गांधीजी ने यही सवाल पूछा–"मीर आलम कहाँ?" जब लोगों ने उन्हें बताया कि वह गिरफ़्तार हो गया है, तब गांधीजी ने यही कहा था–"उसको छोड़ देना चाहिये था।"

गांधीजी को उनके मित्रों ने अपने घर ले जाकर दस दिन तक उनकी सेवा की। उन्हें देखने के लिए रोज लोगों की भीड़ लग जाती थी। स्वस्थ हो जाने के बाद गांधीजी अपनी पत्नी कस्तूर बा तथा अपने

बच्चों को देखने फिनिक्स गये। कस्तूरबा के पास रेल के किराये तक के लिए पैसे न थे। इसलिए वे बच्चों के साथ गांधीजी को देखने जा नहीं सकी थीं।

इस प्रकार गांधीजी ने स्मट्स के साथ जो समझौता किया था, उसे निभाने के लिए अपनी जान लगा दी थी। फिर भी स्मट्स ने अपने वादे का पालन न किया। इस पर गांधीजी ने 'इंडियन ओपीनियन' पत्रिका में "सरासर धोखा" नामक शीर्षक से एक कड़ा लेख लिखा था।

इसके बाद गांधीजी ने दूसरे सत्याग्रह की योजना बनायी। ट्रान्सवाल के भारतीयों ने एक अलाव जलाकर अपने रजिस्ट्रेशन संबन्धी कार्डों की होली जलायी। जनरल स्मट्स के लिए यह जूते की मार थी। जेल से रिहा होने पर मीर आलम ने बड़ी श्रद्धा के साथ गांधीजी से हाथ मिलाया।

भारतीय सब जेल जाने को तैयार हुये। कुछ भारतीयों ने नेटाल की सीमा पार करके रजिस्ट्रेशन क़ानून का उल्लंघन किया और इस अपराध में वे गिरफ़्तार हो गये। बिना अनुमति पत्र के हाटों में व्यापार करना जेल जाने का एक आसान तरीक़ा था। व्यापार करने के लिए अनुमति-पत्रों के होते हुये भी अधिकारियों के पूछने पर कुछ भारतीयों ने उन्हें नहीं दिखाया और वे भी गिरफ़्तार हुये।

गांधीजी अक्तूबर १९०७ में गिरफ़्तार हुये। अव्वल दर्जे के धूर्तों के रहने वाले जेल में उन्हें रखा गया। उन क़ैदियों के साथ गांधीजी से भी पत्थर जैसी ज़मीन खोदवायी। गांधीजी के हाथों में छाले पड़ गये। थककर बेहोश होनेवाले क़ैदियों में उन्होंने उत्साह भर दिया।

ट्रान्सवाल की सरकार आखिर कितने लोगों को जेल में रख सकती थी? वह खर्चीला काम था। इसलिए उस सरकार ने

भारतीयों को हिन्दुस्तान भेजने का निश्चय किया। वह काम अत्यंत क्रूरतापूर्ण था। अधिकांश दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों के लिए हिन्दुस्तान में अपना कहनेवाला कोई न था। वे एक दम दक्षिण आफ्रिका के निवासी ही बन गये थे। ऐसे असहायों की मदद करने गांधीजी ने सुप्रीम कोर्ट में मुक़द्दमा दायर किया। सुप्रीम कोर्ट ने फ़ैसला दिया कि देश निकाला क़ानून ही क़ानून के विरुद्ध है। भारतीय व्यापारियों पर गोरे सूदखोरों ने दबाव डालकर उनका दीवाला निकाल दिया। उनका अपराध केवल यही था कि वे गांधीजी के द्वारा चलाये जानेवाले आन्दोलन में शामिल थे।

इन घटनाओं के कारण आन्दोलन बन्द न हुआ, पर उस में स्तब्धता आ गयी।

१९०९ म दक्षिण आफ्रिका की एकता के लिए इंग्लैण्ड में चर्चाएँ शुरू हुईं। उस वक़्त गांधीजी ने इंग्लैण्ड जाकर वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों से भेंट की। लेकिन दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों की हालत को सुधारने के लिए उन्हों ने जो प्रयत्न किया, वह बेकार हो गया। भारतीयों के अधिकारों के लिए लड़नेवाला आन्दोलन बन्द होता दिखाई न पड़ा। जिन भारतीय व्यापारियों का दीवाला निकल गया था, वे राजनीति से हट गये। सत्याग्रह-संघ के पास निधि न थी। मगर संयोग से १९१० में सर रतनलाल ताता ने इस संघ को २५,००० रुपये भेजे। इस के बाद इंडियन नेशनल कांग्रेस, मुस्लिमलीग और हैदराबाद निजाम से भी धन प्राप्त हुआ।

फिर भी खर्च कम करने के ख्याल से गांधीजी ने सत्याग्रहियों के लिए एक शिविर का इंतज़ाम किया। वह शिविर 'टालस्टायफाम्' नामक ११०० एकड़ क्षेत्र में था। वहाँ पर एक हज़ार फलों के पेड़ तथा एक मकान भी था। उस शिविर

में ५० से ७० तक सत्याग्रही—हिन्दू, मुस्लिम फ़ारसी, ईसाई—रहकर जेल से भी कठोर जीवन क़िफ़ायत के साथ बिताने लगे। बच्चों से लेकर सब कोई मेहनत करते थे। इस क्षेत्र को कल्लेन बारव नामक एक जर्मनवासी ने खरीदा था। वह गांधीवादी था। वह जूते सीना जानता था। इस कला को गांधी जी से लेकर सबने सीखा।

सत्याग्रह चार वर्ष तक चला। जून १९११ में पंचम जार्ज का पट्टाभिषेक हुआ। उस मौक़े पर सब सत्याग्रही रिहा किये गये और उस के साथ एक प्रकार का समझौता भी हुआ। यह समझौता १९११ के अंत तक चला। १९१२ में गोपालकृष्ण गोखले दक्षिण आफ्रिका के अतिथि बन कर आये और उन्होंने दक्षिण आफ्रिका की यात्रा की। उन्होंने दक्षिण आफ्रिका यूनियन के मंत्रियों से चर्चा करके गांधीजी से कहा—"साल भर में सारी हालत सुधर जायगी। इसलिए आप हिन्दुस्तान वापस जाइये।"

"आप नहीं जानते कि ये मंत्री किस प्रकार के स्वभाव के हैं। मैं इन्हें खूब जानता हूँ।" गांधीजी ने उत्तर दिया।

आखिर गांधीजी की बात सच निकली गोखले के कहे अनुसार दक्षिण आफ्रिका की सरकार ने भारतीयों पर जो तीन पाउण्ड का कर लगाया था, उसे उठाया नहीं। यही नहीं, उल्टे दक्षिण आफ्रिका की सरकार ने यह क़ानून भी पास किया कि ईसाई धर्म के अनुसार जो शादियाँ नहीं होतीं, वे मान्य न होंगी। इस क़ानून के मुताबिक़ हिन्दू, मुस्लिम तथा फ़ारसी धर्म के अनुसार जो शादियाँ हुई थीं, वे अवैधानिक बन गयीं और उन की संतान भी अवैधानिक साबित हुई। गांधीजी ने इस क़ानून के अमल होने से घोर विरोध किया। लेकिन उनका प्रयत्न बेकार साबित हुआ।

९७. 'रपनुई' की प्राचीन मूर्तियाँ

"रपनुई" नामक प्रदेश चिली (दक्षिण अमेरिका) देश से २,००० मील दूर प्रशांत महासागर में है। १७२२ ईस्टर के समय इतवार को सर्वप्रथम एक यूरोपियन—डच नौकाधिकारी ने इस टापू पर क़दम रखा, इसलिए इसका नाम "ईस्टर" टापू पड़ा। इस टापू में 'पोलिनीशियन' नामक प्राचीन जाति के लोग अल्प संख्या में निवास करते हैं। इन लोगों ने अपने पुरखों की मूर्तियों को श्मशान वाटिकाओं के पास खड़ा किया है। एक मूर्ति का वज़न ५० टन तक का होता है। इन मूर्तियों को गढ़ने के लिए शिलाओं को ये लोग ईशान दिशा से लाये थे। यह बात आश्चर्य की मालूम होती है कि ऐसी वजनदार शिलाओं को किसी प्रकार की मदद के बिना वहाँ तक कैसे लाये ? मगर हाल ही में थार हेयेर्डाल नामक एक शास्त्रवेत्ता ने उस टापू के लोगों को अपने पूर्वजों की भारी मूर्तियों को लकड़ी और रस्सों की मदद से खड़ा करते देखा है।

Photo by Gautam Khata
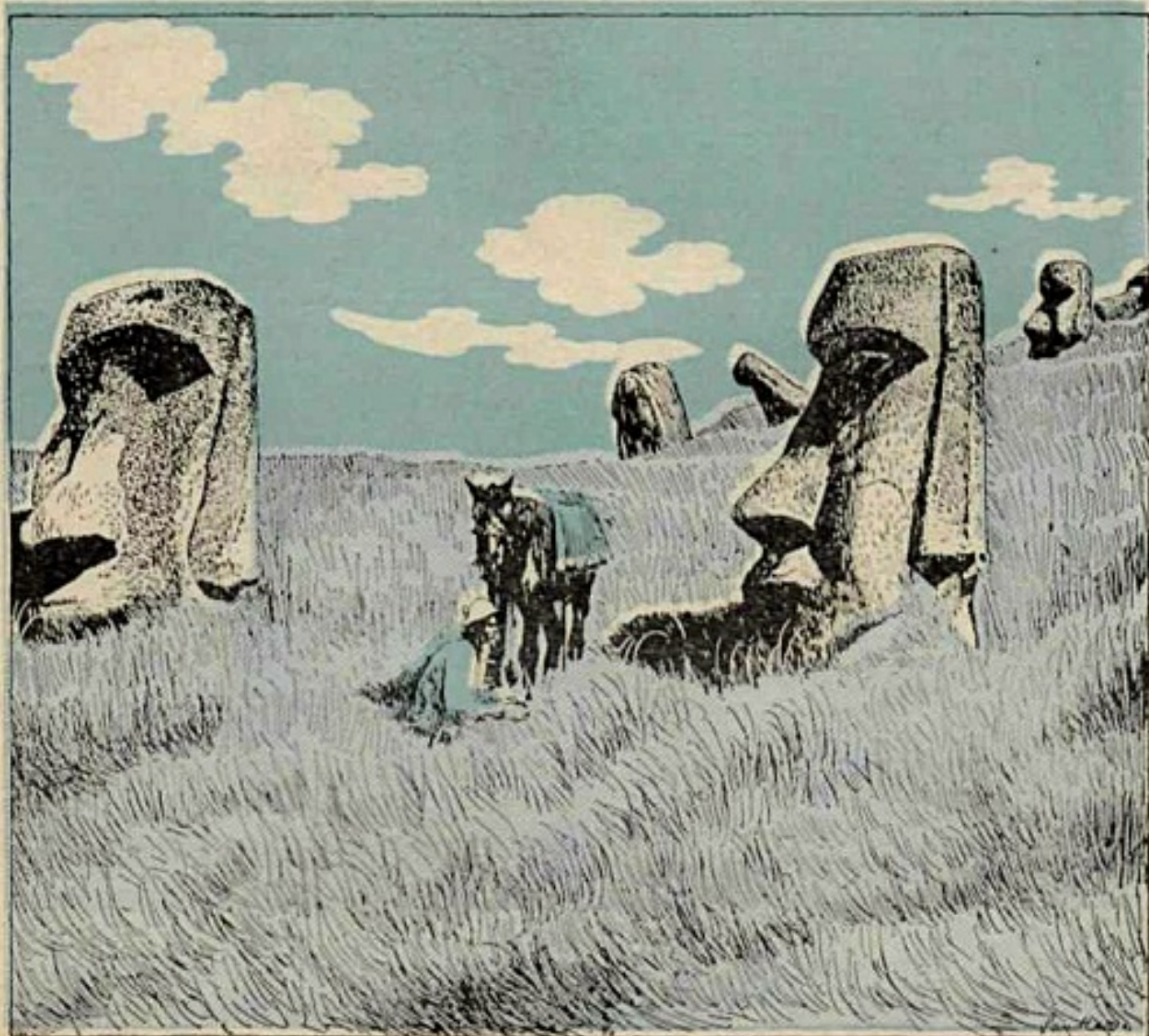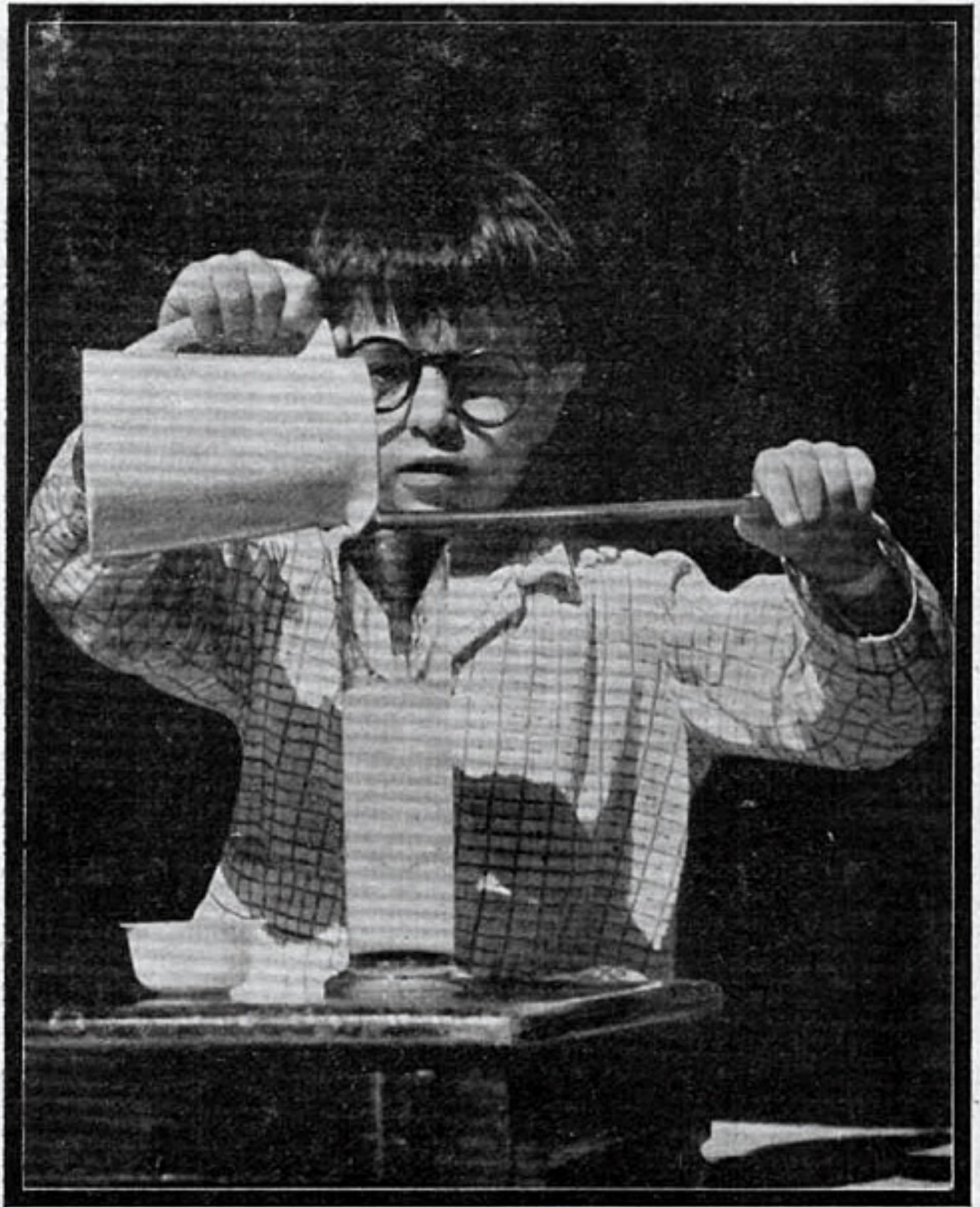
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'केमिस्ट्री से हम घबराते'

प्रेषक : श्री गिरीश कुमार - लखनऊ

Photo by Pranlal K. Patel
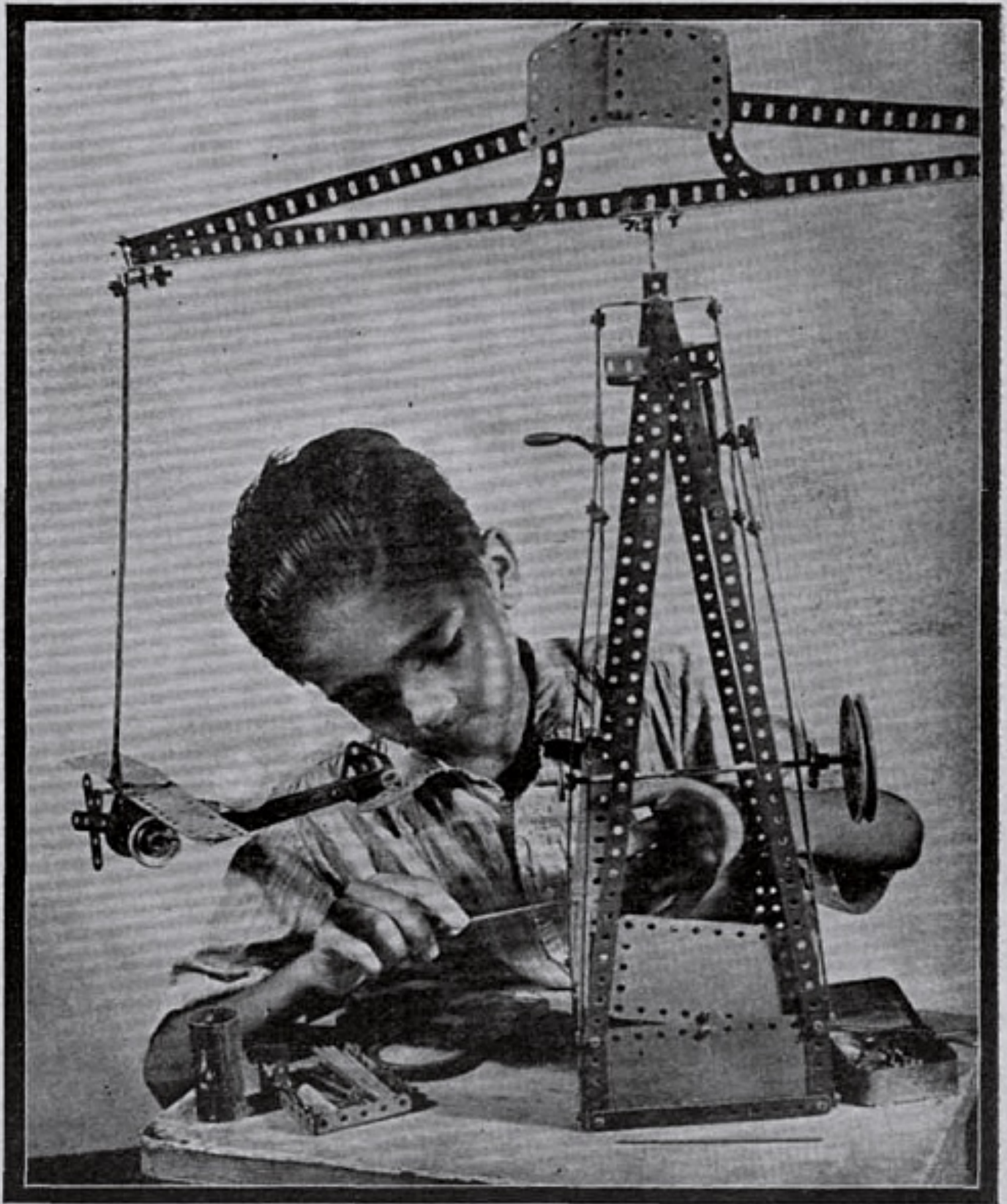
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'पेंच सही है, लगा न पाते'

प्रेषक: श्री गिरीश कुमार - लखनऊ

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

मार्च १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० जनवरी १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जनवरी – प्रतियोगिता – फल

जनवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं।

इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **केमिस्ट्री से हम घबराते।**

दूसरा फ़ोटो: **पेंच सही है, लगा न पाते।**

प्रेषक: **श्री गिरीशकुमार पांडेय,**
४९९/१२५ हसनगंज, लखनऊ-७

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'